डॉ. उषा ठाकुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय

हिंदी केंद्रीय विभाग

में

हिंदी स्नातकोत्तर (एम. ए. हिंदी) के

दशम पत्र के रूप में

प्रस्तुत

शोध पत्र

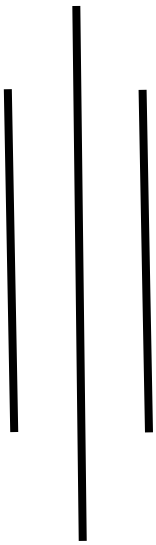

शोधार्थी

मुकेश कुमार मिश्र

हिंदी केंद्रीय विभाग

त्रिभुवन विश्वविद्यालय कीर्तिपुर

काठमांडू, नेपाल

२०७१

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय

हिंदी केंद्रीय विभाग

कीर्तिपुर, काठमांडू

प्रमाणित किया जाता है कि 'प्रा. डॉ. उषा ठाकुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' शोध पत्र मेरे ही निर्देशन में इस विभाग के छात्र मुकेश कुमार मिश्र ने तैयार किया है । एम. ए. हिंदी दशम पत्र के रूप में प्रस्तुत इस शोध पत्र को त्रिभुवन विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृति देने और उचित मूल्यांकन के लिए मैं सिफ़ारिश करती हूँ ।

डॉ. श्वेता दीप्ति

शोध निर्देशक

उप प्राध्यापक

हिंदी केंद्रीय विभाग

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

कीर्तिपुर, काठमांडू

दिनांक : वि. सं. २०७१ ।.....।.....

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय

हिंदी केंद्रीय विभाग

कीर्तिपुर, काठमांडू

स्वीकृति प्रमाण पत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय अंतर्गत हिंदी केंद्रीय विभाग का छात्र मुकेश कुमार मिश्र द्वारा तैयार किया गया 'प्रा. डॉ. उषा ठाकुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' शीर्षक का शोध पत्र आवश्यक मूल्यांकन कर स्वीकृत किया गया है ।

मूल्यांकन समिति

क्र. सं.	पद	नाम	हस्ताक्षर
१	विभागीय प्रमुख	प्रा. डॉ. उषा ठाकुर	
२	शोध निर्देशक	उप प्रा. डॉ. श्वेता दीप्ति	
३.	बाह्य परीक्षक	डॉ. रामदयाल राकेश	

दिनांक : वि. सं. २०७१ ।.....।.....

भूमिकान

मेरी दृष्टि में प्रा. डॉ. उषा ठाकुर नेपाल के हिंदी साहित्यकारों की पंक्ति में अग्रगण्य नामों में से एक है । हिंदी साहित्य की समृद्धि में डॉ. उषा का उल्लेख्य योगदान है । उनके योगदान के आभार से मुक्त नेपाली साहित्य भी नहीं है । हिंदी के साथ-साथ नेपाली साहित्य जगत में भी उनकी एक विशिष्ट पहचान कायम है ।

उन्होंने कविता, कहानी, अनुवाद, निबंध जैसी साहित्य की अनेक विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है, परंतु विशेष कर समालोचना उनके सृजन का मुख्य ध्येय रहा है और वह एक कुशल समालोचक के रूप में जानी जाती हैं । नेपाल-भारत के बीच साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संबंध पर मल-जल सिंचन में डॉ. उषा की कृतियों का उल्लेख्य योगदान है । उनकी कृतियों में दृष्टि की व्यापकता, नीर-क्षीर विवेचन चातुर्य, सामाजिक चेतना, सकारात्मकता एवं स्वीकारात्मकता, विश्व बंधुत्व का आग्रह आदि तत्व दृष्टिगोचर होते हैं । और ऐसे तत्वों को स्वयं में समा लेने के लिए जिस पात्रत्व की आवश्यकता होती है, वह पात्रत्व डॉ. ठाकुर के व्यक्तित्व में अनायास ही दिखाई पड़ता है । उनकी मृदुता और हार्दिक कोमलता में सहज ही एक आदर्श मातृत्व के दर्शन होते हैं । और यही वजह है कि मैं उनके विषय में शोध करने के लिए तत्पर हो उठा ।

इस शोध पत्र के लेखन में मैंने आधुनिक मानकीकृत हिंदी वर्तनी व्यवस्था का अनुसरण किया है, जिसके अनुरूप 'हिन्दी' के स्थान पर 'हिंदी', 'दिखायी' के स्थान पर 'दिखाई', 'किये' के स्थान पर 'किए' आदि परिवर्तन किए गए हैं । इसके अलावा तत्पुरुष समास के पदों को पद वियोग करके लिखा गया है, जैसे वर्तनी व्यवस्था, शोध पत्र, जन्म स्थान आदि

इस शोध कार्य में अपेक्षित साक्षात्कार हेतु अपने व्यस्ततम समय में से निकालकर मेरी जिज्ञासाओं की पूर्ति करने में मेरी सहायता करने के लिए मैं अपनी गुरु एवं शोध पात्र प्रा. डॉ. उषा ठाकुर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। साथ ही मेरी शोध निर्देशक एवं गुरु उप प्रा. डॉ. श्वेता दीप्ति, जिन्होंने उचित मार्गदर्शन के साथ इस शोध कार्य को पूरा कर पाने में मुझे सफलता दिलाई है, उनके प्रति मैं हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ। मेरे श्रद्धेय पिताजी और गुरु संस्कृत एवं हिंदी साहित्य के विशिष्ट विद्वान पं श्री कैलास मिश्र, जो बचपन से मुझे अपने सान्निध्य में रखकर मेरी भाषिक क्षमता अभिवृद्धि के लिए संस्कृत भाषा शिक्षण की प्रेरणा देने के साथ-साथ शिक्षा भी देते रहे, उनके प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञ हूँ। इसके अलावा मेरी धर्मपत्नी हिना, जिसने शारीरिक एवं वैचारिक तौर पर मेरे इस शोध कार्य में सहयोग किया, उसके प्रति भी मैं सप्रेम धन्यवाद ज्ञापन करना चाहता हूँ।

अंत में परंब्रह्म परमात्मा को मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ जिनके सृष्टि संचालन अंतर्गत एक सर्वश्रेष्ठ जीव बनने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है।

मुकेश कुमार मिश्र

शोधार्थी, स्नातकोत्तर द्वितीय वर्ष

हिंदी केंद्रीय विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय

कीर्तिपुर

विषय सूची

	शीर्षक	पृष्ठ
१.	**प्रथम परिच्छेद**	१-११
	शोध परिचय	
२.	**द्वितीय परिच्छेद**	१२-२५
	नेपाल में हिंदी भाषा एवं साहित्य की अवस्था	
३.	**तृतीय परिच्छेद**	२६-४२
	डॉ. उषा ठाकुर	
४.	**चतुर्थ परिच्छेद**	४३-५४
	डॉ. उषा का व्यक्तित्व	
५.	**पंचम परिच्छेद**	५५-६०
	डॉ. उषा का कृतित्व	
६.	**षष्ठम परिच्छेद**	६१-७०
	उपसंहार	
७.	**संदर्भ ग्रंथ सूची**	

प्रथम परिच्छेद

शोध परिचय

१.१ शोध शीर्षक

प्रस्तुत शोध का शीर्षक 'प्रा. डॉ. उषा ठाकुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' है ।

१.२ शोध प्रयोजन

यह शोधपत्र त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय अंतर्गत हिंदी केंद्रीय विभाग में स्नातकोत्तर की उपाधि हेतु एम. ए. हिंदी दशम पत्र के रूप में प्रस्तुत है ।

१.३ समस्या कथन

प्रा. डॉ. उषा ठाकुर का जन्म सन् ६ जून १९५१ में पटना में हुआ । हिंदी साहित्य में विद्यावारिधि से विभूषित डॉ. उषा बाल्यकाल से ही हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में अपनी लेखनी चलाती रही हैं । 'नदी और नारी' कविता, जो सन् १९७० में पटना के दैनिक अखबार 'आर्यावर्त' में प्रकाशित हुई थी, से उन्होंने साहित्य सृजन की शुरूआत की थी । इसके अनंतर सन् १९७५ में आकाशवाणी पटना से उनकी कहानी 'आँसू बन गए फूल' उन्हीं की आवाज़ में प्रसारित हुई थी । इसके पश्चात कहानी, कविता, समालोचना, अनुवाद आदि विविध विधाओं में उनकी लेखनी निर्बाध रूप से चलती रही है । विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उनके लेख प्रकाशित होने के साथ-साथ हिंदी साहित्यिक पत्रिकाओं की संपादक रह चुकी डॉ. ठाकुर को हिंदी व नेपाली दोनों ही भाषाओं के साहित्य सृजन में समान सिद्धहस्तता प्राप्त है । परंतु अभी तक उनके साहित्यिक व्यक्तित्व का समग्र अध्ययन संभव होने का प्रयास नहीं हो पाया है । अतः प्रस्तुत शोधपत्र में निम्न विषय-वस्तुओं पर केंद्रित होकर अध्ययन विश्लेषण किया गया है –

क) डॉ. उषा की जीवनी एवं व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण पक्ष

ख) डॉ. उषा की साहित्यिक रचनाओं का विवरण

ग) डॉ. उषा का जीवन दर्शन

घ) हिंदी साहित्य में डॉ. उषा का योगदान

ङ) डॉ. उषा की साहित्यिक यात्रा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

१.४ शोध कार्य का उद्देश्य

इस शोध कार्य अंतर्गत उपर्युक्त विषय-वस्तु से संबंधित निम्नलिखित उद्देश्यों को उजागर किया गया है –

क) डॉ. उषा की जीवनी और व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण पक्षों को उजागर करना

ख) डॉ. उषा की साहित्यिक विधाओं का अन्वेषण करना

ग) डॉ. उषा की साहित्यिक कृतियों का अन्वेषण करना

और

घ) हिंदी साहित्य जगत में डॉ. उषा की रचनाओं की विशेषता का निरूपण करना

१.५ पूर्व कार्य की समीक्षा

डॉ. उषा ठाकुर की कर्मभूमि नेपाल है और यहाँ वह पिछले चार दशकों से साहित्य क्षेत्र में निर्बाध अपनी लेखनी चलाती आ रही हैं । उनके संबंध में विद्वानों एवं विश्लेषकों ने विभिन्न पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं में चर्चा व विश्लेषण प्रस्तुत किए हैं, जो निम्नलिखित हैं –

१) 'पंत काव्य की सामाजिक भूमिका' पुस्तक में अपना अभिमत देते हुए त्रिभुवन विश्वविद्यालय के तत्कालीन हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. कृष्णचन्द्र मिश्र ने उल्लेख किया

है, "डॉ. उषा शर्मा ठाकुर त्रिभुवन विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में लंबे समय तक अध्यापन अनुसंधान कार्य से संबद्ध रही हैं । मृदुभाषी, अत्यंत मिलनसार तथा अनेक व्यस्तताओं के बावजूद तत्वान्वेषी समीक्षा दृष्टि के कारण विश्वविद्यालय के हिंदी परिवार में ही नहीं, नेपाली साहित्य जगत में भी उन्होंने अपनी कारयित्री तथा भावयित्री प्रतिभा से सभी को अपना प्रशंसक बना लिया है ।"

२) 'युगकवि सिद्धिचरण श्रेष्ठ की काव्य साधना' समालोचनात्मक ग्रंथ की परिचयात्मक टिप्पणी प्रस्तुत करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार जगदीश शमशेर राणा ने लिखा है, " विदुषी प्रा. डॉ. उषा ठाकुर ने जिस सहृदयता, विष्लेषणात्मक दृष्टिकोण और परख से कवि की काव्य साधना के बारे में अपने तर्क और चिंतन प्रस्तुत किए हैं, उसके बारे में नेपाल के नाटककार बालकृष्ण सम का कथन उद्धृत करना सार्थक होगा :

नडूबेर समुद्रमा मोती मिल्दैन

यह एक उच्च समालोचनात्मक पुस्तक साहित्य जगत के समक्ष प्रस्तुत है । कविवर सिद्धिचरण श्रेष्ठ की शतवार्षिकी का उत्सव मनाने के सिलसिले में प्रकाश में आई हुई कवि की कार्य साधना की आयु *भूयश्च शरदः शतात्* और बढ़ती जाएगी, इस कथन में मैं दृढ हूँ ।"

३) नई दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'अक्षर भारत' पत्रिका के फरवरी (१९९९) अंक में वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार अरुण कुमार जैमिनी ने डॉ. उषा ठाकुर द्वारा लिखित 'हिंदी एवं नेपाली साहित्य के प्रतिनिधि हस्ताक्षर' के बारे में लिखा है कि इस पुस्तक में भारत और नेपाल इन दो देशों के साहित्यकारों को एक साथ पाठकों के समक्ष रखकर विश्व साहित्य और विश्व मानव एकता को उद्घाटित करने की चेष्टा की गई है । उषा ठाकुर का साहित्यिक व्यक्तित्व हिंदी और नेपाली साहित्य दोनों से बखूबी जुड़ा हुआ है । सोच के इसी व्यापक दायरे की वजह से इस पुस्तक में उन शीर्ष साहित्यिक हस्ताक्षरों को सम्मिलित किया गया है, जो वादों की शृंखला से मुक्त मानवतावाद और विश्वबंधुत्व की कल्पना को साकार करने में सक्षम हुए हैं ।

प्रा. डॉ. उषा ठाकुर ने इस पुस्तक में पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर हिंदी और नेपाली साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकारों तथा उनके कृतित्व को निष्पक्षता के साथ प्रस्तुत किया है ।

४) नारी पत्रिका के साहित्यक संस्करण (गुंजन प्रकाशन, वि. सं. २०६९) में लीला लुइटेल ने लिखा है, नेपाली और हिंदी दोनों ही भाषाओं में समान रूप से कलम चलाने वाली प्रा. डॉ. उषा ठाकुर नेपाली समालोचना क्षेत्र में एक उल्लेखनीय नाम है । नेपाली और हिंदी साहित्य के विभिन्न संदर्भों को तुलनात्मक रूप में समालोचना लिखने वाली यह प्रथम समालोचक हैं ।

५) साझा प्रकाशन से वि. सं. २०६२ में प्रकाशित पुस्तक 'महिला समालोचक र नेपाली समालोचना' में सं. सुधा त्रिपाठी ने उल्लेख किया है, प्राध्यापन पेशे से संलग्न डॉ. उषा ठाकुर कविता, कथा, समालोचना जैसी विधाओं में हिंदी और नेपाली दोनों साहित्यों में सफलता पूर्वक कलम चला रही हैं । साहित्यकार और पाठक के बीच संप्रेषण सेतु निर्माण करने की आकांक्षा में डॉ. उषा समालोचना लेखन की ओर प्रस्तुत हुई हैं ।

५) भारत के हैदराबाद स्थित 'शीला युद्धवीर शोध संस्थान' ने प्रा. डॉ. उषा ठाकुर द्वारा संपादित 'हिमालिनी' (तत्कालीन त्रैमासिक हिंदी साहित्यिक पत्रिका) के लिए मूल्यांकन गोष्ठी का आयोजन किया । इसकी अध्यक्षता निभाते हुए वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार श्री एम. उपेन्द्र ने कहा कि हिंदी में प्रा. डॉ. उषा ठाकुर के प्रमुख संपादकत्व में प्रकाशित 'हिमालिनी' पत्रिका नेपाली तथा हिंदी भाषा के बीच एक संपर्क सेतु के रूप में प्रकाशित हो रही है । हिमालिनी भारत और नेपाल के विविध साहित्यिक सामग्रियों को प्रस्तुत करके महत्वपूर्ण कार्य कर रही है । पत्रिका नेपाली की विशिष्ट रचनाओं का हिंदी अनुवाद के साथ प्रस्तुत करने के अलावा नेपाल के बारे में विशेष जानकारीमूलक लेख-रचनाएँ प्रस्तुत कर रही है ।

यह अवतरण वि. सं. २०५६ साल श्रावण १० गते के गोरखापत्र एवं कान्तिपुर में प्रकाशित हुआ था ।

६) वि.सं. २०६१ में प्रकाशित नेपाली निबंध संग्रह 'सृष्टिको धरोहर नारी' में सुश्री भद्रकुमारी घले ने उल्लेख किया है "डॉ. उषा ठाकुर का साहित्यिक अध्ययन अत्यंत गहरा है । वह बड़ी अध्ययनशील, विदुषी और प्राज्ञ है उनकी विद्वत्ता को मैं नमो नमः नमस्कार करती हूँ ।"

७) महिला बालबालिका तथा समाज कल्याण मार्फत प्रदान किए गए नवदेवी सम्मान अंतर्गत नेपाली साहित्य में अभूतपूर्व योगदान के लिए प्रा. डॉ. उषा ठाकुर को भगवती पुरस्कार से सम्मानित किए जाने के प्रसंग में 'नारी' के चैत २०६२ अंक में उल्लेख किया गया है कि प्रा. डॉ. उषा ठाकुर वि. सं. २०३६ साल से साहित्य समालोचना के क्षेत्र में कलम चला रही है । लगनशीलता एवं ईमानदारी के साथ अपने लक्ष्य के प्रति उन्मुख उषा काम के भार से दिन में समय नहीं निकाल पाती हैं । इसलिए लेखन कार्य के लिए वह रात को ही समय दे पाती हैं ।

८) पैरवी प्रकाशन द्वारा २०६८ ज्येष्ठ में प्रकाशित पुस्तक 'नेपाली नारी समालोचना : परम्परा प्रवृत्ति र विश्लेषण, सिद्धान्त र प्रयोग' में ज्ञानु अधिकारी ने लिखा है –

वि. सं. २००८ में इस धरती पर जन्म लेने वाली प्रा. डॉ. उषा ठाकुर नेपाली साहित्य की समालोचना विधा में सर्वपरिचत एवं स्थापित साहित्यकार हैं । खास करके नेपाली और हिंदी साहित्य संबंधित समालोचात्मक शोधपरक लेख, निबंध लिखने वाली समालोचक डॉ. उषा ठाकुर समालोचना क्षेत्र में बहुत लंबे समय से कलम चलाती रही हैं ।

प्रा. डॉ. उषा ठाकुर की नेपाली और हिंदी दोनों भाषाओं में करीब आधा दर्जन से ज़्यादा कृतियाँ प्रकाशित हैं । नेपाली साहित्य और हिंदी साहित्य के बीच तुलनात्मक अध्ययन के बारे में शोधपरक समालोचनात्मक कृतियों की लेखक डॉ. ठाकुर

क्रियाशील एवं स्थापित नारी समालोचक हैं । उनकी इन्हीं प्रकाशित समालोचनात्मक कृतियों और फुटकर समालोचनाओं के आधार पर उनके साहित्य की समालोचनात्मक प्रवृत्तियाँ इस प्रकार प्रतीत होती हैं –

क) जीवनीपरक तथा प्रभावपरक समालोचना की तरफ झुकाव

ख) नेपाली साहित्य स्रष्टा तथा हिंदी साहित्य स्रष्टा के बीच का तुलनात्मक अध्ययन

ग) अनुसंधानपरक तथा विश्लेषणात्मक समालोचना की तरफ अभिमुख

घ) साहित्य के विविध विधा तथा पक्ष में केंद्रित होकर कृतिपरक गहन अध्ययन

ङ) सामान्य तथा व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक शैली की ओर उन्मुख

९) वरिष्ठ साहित्यकार मोदनाथ प्रश्रित ने भृकुटी (समालोचनात्मक एवं अनुसंधानात्मक साहित्यिक-सांस्कृतिक त्रैमासिक पत्रिका, माघ-फागुन-चैत, २०६७) में लिखा है– लेखन क्षेत्र की दृष्टि से प्रा. डॉ. उषा ठाकुर साहित्यिक समालोचना, कविता, कथा जैसी विधाओं में सुपरिचित हैं । तथापि उनका परिचय समालोचना विधा में अधिक मुखरित है । नेपाली और हिंदी भाषा में निरंतर कलम चलाने वाली एवं संपादन कार्य में समेत संलग्न रही डॉ. उषा ठाकुर शिक्षा और साहित्य में अपने उल्लेखनीय योगदान की बदौलत विभिन्न संघ-संस्थाओं से सम्मानित होती रही हैं ।

१०) नरेन्द्रराज प्रसाई द्वारा लिखित एवं नइ प्रकाशन द्वारा वि. सं. २०६३ में प्रकाशित नारीचुली (नेपाली महिला साहित्यकारों के बारे में समालोचनात्मक संग्रह) में उल्लेख किया गया है कि नेपाली भाषा साहित्य में डॉ. उषा ठाकुर की अपनी एक पहचान स्थापित है । वह नेपाली भाषा साहित्य की एक क्रियाशील व्यक्तित्व हैं । वह व्यवहार में जितनी शिष्ट, मर्यादित और इमानदार हैं, उनकी बोली में भी उतनी ही मृदुता प्राप्त होती है । उनको जानने वाले उनकी शिष्टता, शालीनता और बोली-वचन की बहुधा प्रशंसा करते हैं कि उनकी बोली करुणा मिश्रित होती है । उनके

बोलने से लालीगुराँस के खिलने जैसे अलग एक शांत और रम्य वातावरण सृजित हो जाता है ।

नेपाली साहित्य सृजन कर्म में डटी हुई डॉ. ठाकुर साहित्य चिंतन में सामाजिक परिवेश का आलिंगन करती हैं । उन्होंने कविता, निबंध जैसी विधाओं में भी अपने हस्ताक्षर प्रस्तुत किए हैं, पर उषा ठाकुर समालोचना के क्षेत्र में एक स्थापित नाम है ।

१०) वुमन राइटर्स ऑफ नेपाल नामक समालोचनात्मक संग्रह में साहित्यकार जगदीश राणा ने लिखा है :

Usha thakur started writing regularly in the field of criticism many of the works got published and various issues raised in her writings drew the attention of thinkers, writers and teachers of literature. Her style of writing and thoughtful expositions made its place in Nepal's literature.

Though her mother tongue is Hindi but she speaks sweetly in Nepali. Her writing in Nepali literature is also more correct than those of more writers. She is an established woman literator in Nepal.

What better example can we have than Usha Thakur as a symbol and promoter of the boundless friendship between Nepal and India and sisterly relation between Nepali and Hindi literature. In her English poetry named 'cloud' she says –

The rumbling clouds are jumping on all sides

It does not chose any special direction

No boundries or destination does it have

Because the entire world belongs to it.

११) 'अन्नपूर्ण पोस्ट' के वृहस्पतिवार परिशिष्टांक (वि. सं. २०७०-वैशाख-१२) में उल्लेख किया गया है कि प्रा. उषा ठाकुर २०३६ साल से कीर्तिपुर स्थित त्रिभुवन विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर स्तर में प्राध्यापन कर रही हैं । लंबे समय से नेपाली और हिंदी साहित्य में उल्लेखनीय योगदान प्रदान करती आईं डॉ. उषा अनेक मान-सम्मान और कदर पत्र से सम्मानित हो चुकी हैं ।

१२) 'गगनाञ्चल' के जनवरी-मार्च,२००५ अंक में संपादक ने डॉ. ठाकुर के लेख 'अंधा युग एवं अश्वत्थामा' की समीक्षा करते हुए लिखा है, "प्रख्यात कवि धर्मवीर भारती की रचना 'अंधा युग' व नेपाली कवि माधवप्रसाद घिमिरे की कृति 'अश्वत्थामा' कालजयी रचनाएँ हैं । नेपाली विदुषी साहित्यकार प्रा. डॉ. उषा ठाकुर का लेख 'अंधा युग एवं अश्वत्थामा' के माध्यम से युद्धोन्मुखी प्रवृत्ति को निर्मूल करने के निहित आग्रह से परिचित कराता है ।"

१३) डॉ. उषा ठाकुर की 'नेतृत्व' कविता की समालोचना करते हुए 'गगनाञ्चल' (अप्रैल-जून, १९९८) में लिखा है, "प्रा. डॉ. उषा ठाकुर एक चर्चित कवयित्री हैं और पड़ोसी देशों में हिंदी कविता को विकास देने वाली एक प्रतिभा हैं ।

१४) गगनाञ्चल के अक्टूबर-दिसंबर, १९९८ अंक में स्तंभकार विजय विद्रोही की धारणा थी, "प्रा. डॉ. उषा ठाकुर पिछले अनेक वर्षों से स्नातकोत्तर हिंदी बिभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू में अध्ययन-अध्यापन और अनुसंधान कार्य से संबद्ध रही हैं । इनका साहित्यिक व्यक्तित्व हिंदी और नेपाली साहित्य के बीच सेतु का काम करता

है । भारत और नेपाल दोनों देशों के बीच साहित्यिक, धार्मिक और सामाजिक स्तर पर गहरा साम्य दिखाई देता है । समीक्ष्य पुस्तक 'हिंदी और नेपाली साहित्य के प्रतिनिधि हस्ताक्षर' में दोनों भाषाओं के शीर्षस्थ साहित्यकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व के मर्म का चित्रण इस पुस्तक में है । समाज को एक नई दिशा देने और विश्वबंधुत्व की मंगल कामना के उद्देश्य से ही लेखिका ने दो संस्कृति और साहित्य की धाराओं को एक कलम पर रखकर परस्पर वैचारिक आदान-प्रदान के माध्यम से एक-दूसरे को और अधिक मज़बूती से जोड़ने की कोशिश की है । यह गहन, प्रामाणिक व मौलिक विवेचन-विश्लेषण विशेष कर शोधार्थियों को आकृष्ट करेगा । निश्चय ही यह पुस्तक लेखिका के गहन अध्ययन व अनुशीलन का परिणाम है ।

१.६ शोध कार्य का औचित्य

डॉ. उषा ठाकुर लगभग चार दशकों से साहित्य सृजन में दत्तचित्त होकर अग्रसर हैं । परंतु इनके संबंध में आंशिक चर्चा-परिचर्चा के अलावा विस्तृत अध्ययन का स्रोत अनुपलब्ध है । हिंदी के अलावा नेपाली साहित्य सृजन में भी सिद्धहस्त डॉ. ठाकुर के विषय में अध्ययन अनुसंधान औचित्यपूर्ण एवं अपेक्षित है । विविध साहित्य प्रतिभाओं एवं उनकी रचनाओं के विषय में विस्तृत अध्ययन के आकांक्षियों के लिए यह शोध कार्य महत्वपूर्ण हो सकता है । नेपाल में हिंदी सहित्य की अनुसंधान परंपरा के विकास में भी यह शोध कार्य उपयोगी सिद्ध होगा ।

१.७ अध्ययन का सीमांकन

इस शोध कार्य में साहित्यकार डॉ. उषा ठाकुर के जीवन एवं व्यक्तित्व का सामान्य परिचय के साथ-साथ उनकी प्रकाशित कृतियों एवं लेख-रचनाओं की सूची एवं संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत किए गए हैं । प्रा. डॉ. ठाकुर तथा हिंदी एवं नेपाली भाषाओं में उनके द्वारा रचित एवं प्रकाशित कृतियों, लेख-रचनाओं के सामान्य विश्लेषण में यह शोध केंद्रित है ।

१.८ शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य को प्रामाणिक बनाने व इसके सुव्यवस्थित अध्ययन हेतु शोध पात्र डॉ. ठाकुर से व्यक्तिगत साक्षात्कार, उनकी कृतियों का अध्ययन, उनके बारे में विभिन्न साहित्यकारों एवं पत्रकारों द्वारा लिखे आलेखों का अध्ययन एवं उनके व्यक्तित्व और उनकी साहित्यिकता से अभिज्ञ कुछ व्यक्तित्वों के साथ बातचीत को आधार बनाया गया है ।

१.९ शोधपत्र की रूप-रेखा

प्रस्तुत शोधपत्र को सुष्ठ, स्पष्ट और सुव्यवस्थित बनाने के क्रम में इसे विभिन्न परिच्छेद के अंतर्गत शीर्षक तथा उपशीर्षकों में विभक्त किया गया है ।

प्रथम परिच्छेद : शोध परिचय

इस परिच्छेद में शोध शीर्षक, शोध प्रयोजन, समस्या कथन, शोध कार्य का उद्देश्य, पूर्व कार्य की समीक्षा, शोध कार्य का औचित्य, अध्ययन का सीमांकन, शोध विधि और शोध पत्र की रूप-रेखा प्रस्तुत हैं ।

द्वितीय परिच्छेद : नेपाल में हिंदी भाषा एवं साहित्य की अवस्था

इस परिच्छेद में हिंदी भाषा का सामान्य परिचय देते हुए कालक्रमिक रूप से नेपाल में हिंदी भाषा का प्रयोजन, अध्ययन के स्रोत, हिंदी साहित्य का पदार्पण एवं इसके साहित्यकार आदि के संबंध में संक्षिप्त विवेचन किया गया है ।

तृतीय परिच्छेद : डॉ. उषा ठाकुर की जीवनी का अध्ययन

इस परिच्छेद में डॉ. ठाकुर की जीवनी प्रस्तुत है । शोध पात्र की पृष्ठभूमि, जन्म एवं जन्म स्थान, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, विवाह, संतान, शिक्षा-दीक्षा, वृत्ति (पेशा), साहित्यिक संलग्नता, साहित्य रचना एवं प्रकाशित कृतियाँ, पत्र-पत्रिका संपादन, सम्मान

तथा पुरस्कार, भ्रमण, रुचि तथा स्वभाव, साहित्य के प्रति धारणा, जीवन दर्शन एवं जीवनी का निष्कर्ष आदि विषयों की चर्चा है ।

चतुर्थ परिच्छेद : डॉ. उषा ठाकुर के व्यक्तित्व का अध्ययन

प्रस्तुत शोध पत्र के चतुर्थ परिच्छेद में डॉ. उषा ठाकुर के व्यक्तित्व के बारे में चर्चा की गई है । इसमें क्रमशः पृष्ठभूमि, निजी व्यक्तित्व, सार्वजनिक व्यक्तित्व, साहित्यिक व्यक्तित्व, साहित्येतर व्यक्तित्व आदि की चर्चा की गई है ।

पंचम परिच्छेद : डॉ. उषा ठाकुर के कृतित्व का अध्ययन

इस परिच्छेद में डॉ. ठाकुर की कृतियों का अध्ययन किया गया है । इसमें डॉ. उषा ठाकुर की प्रकाशित कृतियों का सूची संकलन एवं उनका सामान्य विश्लेषण प्रस्तुत है ।

षष्ठम परिच्छेद : उपसंहार

इस परिच्छेद में शोध कार्य के उपसंहार और संभावित शीर्षकों की चर्चा के साथ ही कुछ महत्वपूर्ण तसवीरें संकलित हैं ।

द्वितीय परिच्छेद

नेपाल में हिंदी भाषा एवं की साहित्य की अवस्था

२.१ हिंदी भाषा

हिंदी भाषा विश्व के कई भागों में बोली एवं समझी जाती है। भारत और अन्य देशों में ६० करोड़ से अधिक लोग हिंदी बोलते पढ़ते और लिखते हैं। नेपाल सहित फ़िजी, मॉरिशस, गयाना, सूरिनाम की अधिकतर जनता हिंदी बोलती है। हिंदी राष्ट्रभाषा (भारत की), राजभाषा, संपर्क भाषा, जन भाषा के सोपानों को पार करते हुए विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है। भाषा विज्ञान से जुड़े वैज्ञानिकों की भविष्यवाणी हिंदी प्रेमियों के लिए बड़ी संतोषजनक है कि आने वाले समय में विश्व स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय महत्व की जो चंद भाषाएँ होंगी उनमें हिंदी भी प्रमुख होगी।

२.२ 'हिंदी' शब्द की व्युत्पत्ति

'हिंदी' शब्द का संबंध संस्कृत शब्द 'सिंधु' से माना जाता है। 'सिंधु' सिंध नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आस-पास की भूमि को सिंधु कहा जाने लगा। यह सिंधु शब्द ईरानी में जाकर 'हिंदू', 'हिंदी' और फ़िर 'हिंद' हो गया। क्योंकि ईरान की प्राचीन भाषा अवेस्ता में स् ध्वनि नहीं बोली जाती थी स् को ह् रूप में बोला जाता था। जैसे संस्कृत के असुर शब्द को वहाँ अहुर बोला जाता था। इस बात का उल्लेख प्रोफ़ेसर महावीर सरन जैन ने अपने 'हिंदी एवं उर्दू का अद्वैत' शीर्षक आलेख में हिंदी की व्युत्पत्ति पर विचार करते हुए किया था।

बाद में ईरानी भारत के अधिक भागों से परिचित होते गए और इस शब्द के अर्थ में व्यापकता आती गई तथा हिंद शब्द पूरे भारत का वाचक हो गया। इसी में ईरानी का 'ईक' प्रत्यय लगने से हिंदीक बना, जो विशेषण शब्द है और इसका अर्थ है 'हिंद का'। हिंदी भाषा के लिए इस शब्द का प्राचीनतम प्रयोग शरफ़ुद्दीन यजदी के ज़फ़रनामा (सन्

१४२४) में मिलता है । अफ़गानिस्तान के बाद सिंधु नदी के इस पार हिंदुस्तान के पूरे इलाके को प्राचीन फ़ारसी साहित्य में भी 'हिंद' 'हिंदुस्' के नामों से पुकारा गया है तथा वहाँ की किसी भी वस्तु, भाषा, विचार को विशेषण रूप में हिंदीक कहा गया है, जिसका अर्थ है 'हिंद का' । यही हिंदीक शब्द अरबी से होता हुआ ग्रीक में 'इंदिके' 'इंदिका', लैटिन में 'इंदिया' तथा अंग्रेज़ी में इंडिया बन गया । भारत में आने के बाद मुसलमानों ने इस भाषा के लिए 'ज़बान ए हिंदी', 'हिंदी जुबान' या हिंदी का प्रयोग किया । ध्यातव्य है तत्कालीन ग़ैर मुस्लिम लोग उस क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा के लिए 'भाखा' शब्द का प्रयोग करते थे ।

२.३ परिवार

हिंदी 'हिंद यूरोपीय भाषा परिवार' के अंतर्गत आती है । यह हिंद ईरानी शाखा की हिंद आर्य उपशाखा के अंतर्गत वर्गीकृत है । हिंद आर्य भाषाएँ वे भाषाएँ हैं, जो संस्कृत से उत्पन्न हुई हैं । उर्दू , कश्मीरी, बंगाली, उड़िया, पंजाबी, रोमानी, मराठी, नेपाली आदि हिंद आर्य भाषाएँ हैं ।

२.४ हिंदी की शैलियाँ

भाषाविदों ने हिंदी की निम्न चार शैलियों का उल्लेख किया है :

१) **उच्च हिंदी** : हिंदी का मानकीकृत रूप, जिसकी लिपि देवनागरी है । इसमें ज़्यादातर शब्द तत्सम यानी संस्कृत के हैं और उन शब्दों ने फ़ारसी तथा अरबी के कई शब्दों की जगह ले ली है, जैसे अगर– यदि, मगर–किंतु, लेकिन–परंतु आदि । इसे शुद्ध हिंदी भी कहते हैं । ध्यातव्य है आजकल अंग्रेज़ी के भी कुछ शब्द मानकीकृत हो चुके हैं । यह खड़ी बोली पर आधारित है, जो दिल्ली एवं आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती है ।

२) **दख्खिनी** : हिंदी का वह रूप जो हैदराबाद और उसके आस-पास के क्षेत्रों में बोला जाता है । इसमें फ़ारसी अरबी के शब्द कम होते हैं । इसके बोलने की शैली थोड़ी-सी अलग है, जैसे 'न' को 'नको' कहा जाता है ।

३) **रेख्ता** : यह उर्दू का ही एक रूप है जो शायरी में प्रयोग किया जाता है ।

४) **उर्दू** : यह हिंदी का ही एक रूप है, जो देवनागरी के बजाय फ़ारसी-अरबी में लिखा जाता है । इसमें संस्कृत शब्दों की संख्या कम एवं फ़ारसी-अरबी शब्दों की संख्या अधिक होती है । यह भी खड़ी बोली पर ही आधारित है ।

हिंदी उर्दू दोनों को मिलाकर जो भाषा निकलती है उसे हिंदुस्तानी कहा गया है । हिंदुस्तानी मानकीकृत हिंदी और मानकीकृत उर्दू के बोलचाल की भाषा है । इसमें शुद्ध संस्कृत और शुद्ध फ़ारसी अरबी दोनों के शब्द कम होते हैं और तद्भव शब्द अधिक । उच्च हिंदी भारतीय संघ की राजभाषा है (अनुच्छेद ३४३, भारतीय संविधान) । यह भारत के उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखंड, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली इन राज्यों की राजभाषा है । वहीं उर्दू पाकिस्तान और भारतीय राज्य जम्मू और कश्मीर की राजभाषा है । लेकिन 'हिंदुस्तानी' को कहीं भी संवैधानिक दर्जा नहीं मिला है ।

२.५ अंतरजाल (इंटरनेट) में हिंदी

कंप्यूटर और इंटरनेट ने पिछले वर्षों में विश्व में सूचना क्रांति ला दी है आज कोई भी भाषा कंप्यूटर (तथा कंप्यूटर जैसे उपकरणों) से दूर रहकर लोगों से जुड़ी नहीं रह सकती । कंप्यूटर के विकास के आरंभिक काल में अंग्रेज़ी को छोड़कर विश्व की अन्य भाषाओं का कंप्यूटर पर प्रयोग की दिशा में बहुत कम ध्यान दिया गया, जिसके कारण सामान्य लोगों में यह गलत धारणा फैल गई कि कंप्यूटर अंग्रेज़ी के सिवा किसी दूसरी भाषा या लिपि में काम ही नहीं कर सकता । किंतु यूनिकोड के पदार्पण के बाद स्थिति बहुत तेज़ी से बदल गई ।

इस समय हिंदी में संजाल (Websites),चिट्ठे (Blogs), विपत्र (Email), गपशप (Chat), खोज (Web search), सरल मोबाइल संदेश (SMS), तथा अन्य हिंदी सामग्री उपलब्ध हैं । इस समय अंतरजाल पर हिंदी में संगठन के संसाधनों के भी भरमार हैं और नित नए कंप्यूटिंग उपकरण आते जा रहे हैं । लोगों में इनके बारे में जानकारी देकर जागरूकता पैदा करने की ज़रूरत है ताकि अधिकाधिक लोग कंप्यूटर पर हिंदी का प्रयोग करते हुए अपना, हिंदी का और पूरे हिंदी समाज का विकास करें ।

२.६ हिंदी का वैश्विक प्रचार

सन् १९९८ के पूर्व मातृभाषियों की संख्या की दृष्टि से विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं के जो आँकड़े मिलते थे, उनमें हिंदी को तीसरा स्थान दिया जाता था । सन् १९९७ में सैन्सस ऑफ इंडिया का भारतीय भाषाओं के विश्लेषण का ग्रंथ प्रकाशित होने तथा संसार की भाषाओं की रिपोर्ट तैयार करने के लिए यूनेस्को द्वारा सन् १९९८ में भेजी गई यूनेस्को प्रश्नावली के आधार पर उन्हें भारत सरकार के केंद्रीय हिंदी संस्थान के तत्कालीन निदेशक प्रोफ़ेसर महावीर सरन जैन द्वारा भेजी गई विस्तृत रिपोर्ट के बाद अब विश्व स्तर पर यह स्वीकृत है कि मातृभाषियों की संख्या की दृष्टि से संसार की भाषाओं में चीनी भाषा के बाद हिंदी का दूसरा स्थान है । चीनी भाषा के बोलने वालों की संख्या हिंदी भाषा से अधिक है किंतु चीनी भाषा का प्रयोग क्षेत्र हिंदी की अपेक्षा सीमित है । अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग क्षेत्र हिंदी की अपेक्षा अधिक है किंतु मातृभाषियों की संख्या अंग्रेज़ी भाषियों से अधिक है ।

बीसवीं शती के अंतिम दो दशकों में हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय विकास बहुत तेज़ी से हुआ

है । वेब, विज्ञापन, संगीत, सिनेमा और बाज़ार के क्षेत्र में हिंदी की मांग जिस तेज़ी से बढ़ी है, वैसी किसी और भाषा की नहीं । विश्व के लगभग १५० विश्वविद्यालयों तथा सैकड़ों छोटे बड़े केंद्रों में हिंदी के अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था हुई है । भारत इतर देशों से २५ से अधिक पत्र पत्रिकाएँ लगभग नियमित रूप से हिंदी में प्रकाशित हो रही

हैं । यूएई के 'हम' एफ एम सहित अनेक देश हिंदी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं, जिनमें बीबीसी, जर्मन के 'डायचे वेले', जापान के 'एन एच के वर्ल्ड' और चीन के 'चाइना रेडियो इंटरनैशनल' की हिंदी सेवा विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ।

२.७ हिंदी भाषा का आरंभ और विकास

हिंदी भाषा के प्रारंभ के विषय में कई मत मतांतर प्रचलित हैं । सामान्यतः साझा मान्यता के आधार पर हिंदी का प्रारंभ सन् १००० के आस-पास माना गया है । अपभ्रंश की समाप्ति और आधुनिक भारतीय भाषाओं के जन्म काल के समय को संक्रांति काल कहा जा सकता है । हिंदी का स्वरूप शौरसेनी और अर्द्ध मागधी अपभ्रंशों से विकसित हुआ है । १००० ई. के आस-पास इसकी स्वतंत्र सत्ता का परिचय मिलने लगा था, जब अपभ्रंश भाषाएँ साहित्यिक संदर्भों में प्रयोग में आ रही थीं । ये ही भाषाएँ बाद में विकसित होकर आधुनिक आर्य भाषाओं के रूप में अभिहित हुईं ।

कुछ खोजों के मुताबिक हिंदी के प्रथम कवि पुष्य माने जाते हैं । कहा जाता है वि. सं. ७७० के आस-पास उन्होंने संस्कृत के एक रीति ग्रंथ का अनुवाद दोहा-चौपाइयों में किया था, किंतु उनकी कोई रचना वर्तमान में उपलब्ध नहीं है । प्राकृत के अंतिम व्याकरणाचार्य, जिनका कार्यकाल १२वीं शताब्दी माना जाता है, द्वारा रचित व्याकरण में नागर अपभ्रंश के उदाहरणों में हिंदी कविता का प्रारंभिक रूप देखने को मिलता है । विद्वानों का मत है कि इस रचना से लगभग २०० वर्ष पूर्व ही हिंदी कविता का उदय हो चुका था । तब से जन साधारण की अभिव्यक्ति के रूप में इसका विकास होता चला आया है । हिंदी के विकास ने अपभ्रंश की विकास गति को अवरुद्ध कर दिया । विचारकों ने अपने उपदेश इसी माध्यम से जन साधारण तक पहुँचाना प्रारंभ कर दिया । और इस प्रकार हिंदी जन-जन की भाषा के रूप में प्राकृत को पीछे छोड़कर अनेक धाराओं में प्रवाहित होने लगी । अवधी, ब्रजभाषा, मैथिली, राजस्थानी और खड़ी बोली के माध्यम से हिंदी अपना रूप विस्तार करने लगी । इस तरह वर्तमान तक की लंबी यात्रा तय करते हुए हिंदी भाषा एक समृद्ध भाषा के रूप में स्थापित हुई ।

२.८ नेपाल में हिंदी भाषा

नेपाल और भारत दो पड़ोसी देश होने के साथ-साथ इनकी प्रगाढ़ मित्रता अक्षुण्ण है । इनके बीच सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं साहित्यिक स्तर पर गहरा साम्य है । नेपाली और हिंदी दोनों ही भाषाओं की लिपि एक है, देवनागरी । नेपाली की हिंदी के साथ समानता अन्य किसी विदेशी भाषा की तुलना में अधिक है । इसके अलावा हिंद, हिंदू और हिंदी की व्युत्पत्ति से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिंदी नेपाल की भी प्राचीन भाषा है । प्राचीन काल से हिमालय और विंध्य पर्वत के बीच की भूमि आर्यावर्त के नाम से प्रख्यात है । इसके मध्य में अवस्थित 'मध्यदेश' हिंदु संस्कृति और सभ्यता का केंद्र माना गया है । इसी मध्यदेश की बोलचाल की भाषा सौरसेनी अपभ्रंश से हिंदी की उत्पत्ति हुई है । मनुस्मृति में हिमालय और विंध्य पर्वत के मध्य एवं विनशन (सरस्वती नदी विलीन स्थल) के पूर्व एवं प्रयाग से पश्चिम मध्यदेश की स्थिति बताई गई है । विनय पिटक के मुताबिक मध्यदेश की सीमा प्रयाग से दूर भागलपुर के नज़दीक माना गया है । यद्यपि इसकी राजनीतिक सीमा का उल्लेख नहीं मिलता है । लगभग १२वीं शताब्दी तक 'मध्यदेश का प्रयोग चलता रहा । वर्तमान में हिंदी प्रदेश प्राचीन मध्यदेश को ही माना जाता है ।

नेपाल में हिंदी प्रदेश (तराई) निवासी को वर्तमान में मधेशी (मध्यदेशीय) कहकर संबोधित किया जाता है नेपाल की दक्षिणी समतल भूमि तराई के साथ-साथ मधेश के नाम से जानी जाती है । हिमाली एवं पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर तराई तक १२३ भाषा भाषी हैं । ऐसे में जहाँ हिमाल पहाड़ के लोग संपर्क भाषा के रूप में यहाँ की राष्ट्रभाषा (सरकारी काम-काज की भाषा) नेपाली का प्रयोग करते हैं वहीं तराई के विविध भाषा भाषी हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग करते हैं । इतना ही नहीं, हिमाली या पहाड़ी व्यक्ति किसी अजनबी तराई वासी से विचारों का आदान-प्रदान करते समय हिंदी का ही उपयोग करते हैं । इससे यह स्पष्ट होता है कि नेपाल में हिंदी व्यापक पैमाने पर जन संपर्क की भाषा है ।

यहाँ हिंदी फ़िल्में, गीत-संगीत, भजन-कीर्त्तन, गज़ल आदि देखने सुनने वालों की अपार संख्या है । नेपाल में हिंदी भाषा अत्यंत लोकप्रिय है तथा आम तौर पर लोग हिंदी भाषा अच्छी तरह समझ लेते हैं । नेपाल के त्रिभुवन विश्वविद्यालय में एम ए तक हिंदी पढ़ाई की व्यवस्था है तथा हिंदी साहित्य में विद्यार्थी पी एच डी तक की डिग्री प्राप्त कर रहे हैं । इसके अलावा वर्तमान में देश भर में भारत सरकार का केंद्रीय विद्यालय और १७ निजी को जोड़कर दर्जन से ज़्यादा विद्यालय ऐसे हैं जिनमें पहली से दसवीं तक हिंदी की पढ़ाई होती है । इन विद्यालयों में डी ए वी (ललितपुर), मॉडर्न इंडियन (काठमांडू), आलोक विद्याश्रम (काठमांडू), चाँद बाग (काठमांडू), रुपिज इंटरनैशनल (काठमांडू), गुरुकुल (काठमांडू), नेपाल-भारत मैत्री विद्यालय (पोखरा), डी ए वी (विराटनगर), डी पी एस (विराटनगर), डी ए वी (वीरगंज), डी पी एस (वीरगंज), दामोदर अकैडमी (जलेश्वर) आदि के नाम शामिल हैं ।

नेपाल से साप्ताहिक, मासिक और वार्षिक को मिलाकर कुल पाँच पत्रिकाएँ हिंदी में प्रकाशित होती हैं । उनमें लोकमत (साप्ताहिक, प्रकाशक– राजेश्वर नेपाली, जनकपुर) हिमालिनी (मासिक, प्रकाशक– सच्चिदानंद मिश्र, काठमांडू), द पब्लिक (मासिक, प्रकाशक– वीणा सिन्हा, काठमांडू), अभ्युत्थान (मासिक, प्रकाशक– ललन तिवारी, काठमांडू), साहित्यलोक (त्रिभुवन विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग, काठमांडू), इनकलाव और नेपाली तथा नव नेपाल शामिल हैं ।

यहाँ के तराई क्षेत्र में हिंदी की उपभाषाएँ और बोलियाँ सहज ढंग से बोली और समझी जाती हैं । पृथ्वीनारायण शाह द्वारा वर्तमान नेपाल राज्य की स्थापना के बाद भी तराई के क्षेत्रों में प्रशासनिक कार्य क्षेत्रीय भाषा (हिंदी) में होता था । इस बात का उल्लेख नेपाल सरकार द्वारा प्रकाशित पुरातत्व पत्र संग्रह में किया गया है ।

शाह वंशीय पुराने राजाओं के काल में नेपाल में दो ही भाषाओं की प्रधानता थी, नेपाली और हिंदी की । धार्मिक और शैक्षिक कार्यों में संस्कृत और अंग्रेज़ी का भी महत्व था । उन राजाओं ने नेपाली के साथ-साथ हिंदी को भी सम्माननीय एवं बराबरी का

दरजा दिया । पृथ्वीनारायण शाह, रणबहादुर शाह, उपेन्द्र विक्रम शाह ने तो स्वयं हिंदी भाषा में रचनाएँ भी की हैं । काठमांडू घाटी के गुह्येश्वरी, केलटोल, नारायण हिटी आदि अनेक स्थानों में हिंदी दोहों और चौपाइयों के शिलालेख खुदे हैं ।

२.७.२ नेपाल में हिंदी साहित्य

नेपाल में हिंदी साहित्य का विशाल भंडार है । यहाँ हिंदी साहित्य रचना की सुदीर्घ परंपरा रही है । कहा जा सकता है कि नेपाल और भारत का संबंध जितना पुराना है, नेपाली और हिंदी साहित्यकारों का संबंध उतना ही पुराना है । यह सुखद संयोग है कि हिंदी का प्राचीन साहित्य 'चर्या गीत' नेपाल में रचा गया था और 'सिद्धों की वाणी' के रूप में उसका प्राचीनतम अंश जो आज उपलब्ध है, उसे सुरक्षित रखने का श्रेय भी नेपाल को है । लगभग हज़ार वर्ष पहले यहाँ के वज्रयानी सिद्धों और नाथ योगियों ने अपभ्रंश भाषा में जो रचनाएँ कीं, वे आज भी यहाँ के नेवार समुदाय में 'चर्या गीत' के नाम से प्रसिद्ध है और उनके सांस्कृतिक अवसरों पर गाया जाता है । उन चर्या पदों का पता नेपाल दरबार लाइब्रेरी में स.म.म. हर प्रसाद शास्त्री ने लगाया था ।

हिंदी साहित्य की अन्य एक महत्वपूर्ण कृति 'वर्ण रत्नाकर' है, जो उपलब्ध नहीं है । उसकी रचना भी नेपाल में ही हुई है । वह ग्रंथ नेपाल की तराई में अवस्थित सिम्रौनगढ़ के कर्नाटवंशी राजा हरिसिंह देव के राज कवि ज्योतीश्वर ठाकुर द्वारा रचित है । समस्त आधुनिक आर्य भाषाओं में इसे गद्य साहित्य का प्रथम सृजन माना जाता है ।

भाषा विकास और हिंदी साहित्य की परंपरा की खोज की दृष्टि से नेपाल में उपलब्ध प्राचीन सामग्रियाँ अत्यंत महत्व की हैं । सिद्धों-नाथों की कविताओं का संकलन नेपाल में प्राप्त होना केवल संयोग नहीं है । यहाँ उसकी दीर्घकालीन सशक्त परंपरा और प्रभाव क्षेत्र भी रहा है, जो आगे चलकर 'जोशमणि' संप्रदाय के हिंदी और नेपाली कवियों के विपुल साहित्य में प्रकट हुआ । नेपाल के जोशमणि निर्गुणिया संत साहित्य के उद्धारक जनक लाल शर्मा के अनुसार, चौरासी सिद्धों में से अनेक नेपाल के ही रहने वाले थे ।

नाथ संतों की अनेक रचनाएँ नेपाल के अनेक स्थानों पर उनके मठों में और अनुयायियों के पास सुरक्षित हैं । इनमें सांप्रदायिक उपदेश तथा लौकिक और अर्द्ध पौराणिक कथाएँ भी हैं । इनमें से कुछ योगी नरहरिनाथ संपादित 'इतिहास प्रकाश' में मुद्रित हैं । 'दंगीशरण कथा' इसी तरह का एक रोचक अर्द्ध पौराणिक उपाख्यान है । दोहा-चौपाई के छंदों में सधुक्कड़ी (अवधी) भाषा में सृजित इस रचना में दांग राज्य की स्थापना की कथा है । 'रतनबोध' और 'गुरु बाबा की जनमौती' इसी प्रकार नाथ संप्रदाय से प्रभावित रचनाएँ हैं । संग्रहकर्ता के अनुसार इसकी पांडुलिपि ६०० साल पुरानी है । 'रतनबोध' में योगी रतननाथ को दिए गए उपदेश हैं । नेपाल के 'जोशमणि' संप्रदाय के संत कवियों में शशिधर और ज्ञानदिल दास की बड़ी प्रसिद्धि है । शशिधर का जन्म वि.सं. १८०४ में हुआ माना जाता है । इन्होंने कबीर की जैसी उलटबासियाँ भी लिखी हैं और साधारण साखियाँ भी । उनकी रचनाएँ 'सच्चिदानंद लहरी', भजन संग्रह आदि हैं ।

संत अभयानंद (वि.सं. १८३८–१९१९) का पूर्व नाम जनरल रणवीरसिंह थापा था । वह नेपाल के महान सेनानी अमरसिंह थापा के पुत्र थे । उनकी कविताओं में दुनियाई छल-प्रपंचों सें बचने का उपदेश है :

झूठ फरेब करे दुनिया में दो दिन का पसारा है

धर्मराज जब लेखा मांगे वही बुझावनहारा है.....

उन्नीसवीं सदी के बड़े पंडित वाणीविलास पांडे ने संस्कृत के साथ-साथ हिंदी में भी रचना की है :

कहे हंस हंसी देखो दस दिक्पाल

अमर नगर ते आगरी सोहत सहर नेपाल

सूर समर समसेर कर मारे कैयों जंग

शिवराम सिंह संगाल उत गिरे सीस तजि अंग

(पुराना कवि र कविता – बाबुराम आचार्य)

उस समय नेपाल के तत्कालीन पंडित विद्यारण्य केशरी ने नेपाली और हिंदी में 'गोपिका स्तुति' और 'द्रौपदी स्तुति' जैसे स्तोत्र काव्यों की रचना की है । उस काल में शाह राजाओं के दरबार में अनेक हिंदी कवियों का आश्रय था । रणबहादुर शाह के दरबारी सुवंश कवि ने 'श्रृंगार चूडामणि' नामक एक वृहत् ब्रजभाषा काव्य की रचना की है । काव्य कृतियों के साथ कुछ अलंकार ग्रथों की रचना भी उस समय हुई है, जिनमें 'रसतरंगिणी', 'अर्थालंकार' आदि प्रमुख हैं । इसी काल में गढ़वाल के सुप्रसिद्ध चारण कवि मौलाराम ने नेपाल संबंधी अनेक काव्यों की रचना की है । ध्यातव्य है उस समय कुमाउँ-गढ़वाल नेपाल के ही अंग थे । उनकी कृतियों में 'रणबहादुर चंद्रिका', 'गोरखाली अमल' आदि उल्लेखनीय हैं ।

भक्ति काव्य के संदर्भ में हिंदी साहित्य को नेपाल की एक बड़ी देन जनकपुर का संत साहित्य है । यहाँ के मठों और आश्रमों में स्थानीय संतों की हिंदी रचनाओं का विपुल भंडार है । यहाँ राम भक्ति शाखा का काव्य सृजन संतों द्वारा पिछले ३०० वर्षों से किसी-न-किसी रूप में अनवरत होता रहा है । इनमें सबसे श्रेष्ठ महात्मा सूरकिशोर हैं । परंतु उनकी कवित्व कृति का वर्तमान में एक मात्र प्रमाण लघु काव्य संकलन 'मिथिला विलास' है । इसमें जनकपुर का महिमा वर्णन तथा किशोरी सीता की वंदना में भाव विभोर कर देने वाले कुछ पद हैं । इस परंपरा की एक रचना 'सीतायन' नामक प्रबंध काव्य है, जिसे बहुत से लोग स्वयं सूर किशोर की रचना मानते हैं । लेकिन यह स्वामी रामप्रिया शरणजी की महत्वपूर्ण रचना है जो हिंदी साहित्य की महान संपदा है । सूर किशोर की शिष्य -परंपरा में अन्य अनेक कवि जनकपुर में हुए हैं । उनकी बहुत-सी रचनाएँ अप्रकाशित रूप में यत्रतत्र पड़ी हैं । उनके शिष्य प्रयागदास की कविताएँ विनोद और भक्ति का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करती हैं । सीताराम की दूल्हा-दुलहन भगवान के रूप में उपासना-परंपरा के प्रमुख कवि 'रसिक अली' थे । उनकी सीताराम की पवित्र प्रणय-लीला संबंधी रचनाओं का मिथिला में खूब प्रचार है । उन्होंने 'अमर रामायाण' के

अतिरिक्त अनेक भाषा काव्य लिखे हैं, जो जनकपुर के प्राचीन आश्रम रसिक निवास मे सुरक्षित हैं। संत साहित्य लेखन की यह परंपरा जनकपुर में अब तक जारी है।

इस तरह नेपाल में साहित्य की लेखन-परंपरा प्राचीन काल से ही विकसित होती चली आ रही है। आधुनिक काल में भी नेपाल में हिंदी साहित्य निरंतरता में है। परंतु शासक वर्ग के पूर्वाग्रह के परिणाम स्वरूप हिंदी साहित्य प्रकाशन में सरकारी सहयोग के अभाव के कारण हिंदी साहित्य रचनाएँ अत्यंत कम प्रकाशित होती हैं। फ़िर भी आधुनिक काल में भी नेपाली साहित्यकारों ने अपना हिंदी प्रेम थोड़ी-बहुत साहित्य-रचना करके व्यक्त किए हैं। इनमे लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा, केदरमान व्यथित, धुस्वां सायमी आदि ख्याति प्राप्त साहित्यकार हैं। अत्याधुनिक काल में नेपाल के लेखकों और कवियों द्वारा लिखे गए साहित्य पहले की अपेक्षा मात्रा में कम होते हुए भी महत्व में कम नही है। उनमें सब से प्रसिद्ध गोपाल सिंह नेपाली हैं। अन्य कवियों मे भवानी गुप्त 'भिक्षु' हैं। हिंदी में उनकी रचना अल्प परिमाण में होते हुए भी शैली और भाव की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। नव युग के स्वागत आह्वान में कवि 'भिक्षु' ने 'पुरातन से' शीर्षक कविता में लिखा है :

'आज सोने से पुरातन,

श्रान्त को अब दे न उलझन।

सुबह ही तो है ज़रूरी...

जग उठे उन्मुक्त नूतन,

सौंप रे तूं मुस्कुराकर

आज अपनी सब धरोहर

दे अमानत नव्य को गति दे।'

नेपाल के मुक्ति संग्राम के योद्धा, शिक्षक तथा हिंदी सेवी कवि रामहरि जोशी की एक रचना 'नया सवेरा' प्रकाशित है । उनकी कविताएं मानवता की मुक्ति कामना से ओतप्रोत है । भाषा सरल, ओजस्वी और प्रभावशाली है :

'लोल लहर किरण चूम

श्स्य श्यामला धर

दिव्य ज्योति स्नान-सी

दीप्त यह वसुंधरा

काल पुरुष शंख फूँक

दे रहा चुनौतियाँ

निखिल व्योम गूँजता

आज वही गाने हैं ।

कोटि-कोटि कण्ठ गा रहे गीत जो

पुण्यमुक्ति पर्व का हो रहा बिहान है ।'

आज से दो दशक पहले हिंदी में साहित्य रचना करने वाले नेपाल के प्रमुख कवियों और लेखकों के नाम और उनकी कृतियाँ निम्न हैं :

यदुवंशलाल के 'पुष्पांजलि' तथा 'सुधा' नामक दो कविता संग्रह प्रकाशित हैं । रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' का उदयन नामक कविता संग्रह प्रकाशित है । सुंदर झा 'शास्त्री' का 'परवशता' नामक कविता संग्रह प्रकाशित है । चन्द्रदेव ठाकुर का कुमारसंभव की कथा पर आधारित 'शैलबला' नामक लघुप्रबंध काव्य प्रकाशित है ।

अनन्त बिहारी लाल दास 'इन्दु' का 'अनुरागमयी' नामक गीत संग्रह प्रकाशित है ।

गोविन्द भट्ट नेपाली और हिंदी दोनों भाषाओं में साहित्य रचना करते हैं । उनकी अनेक हिंदी कविताएँ हैं और 'बुद्ध' नामक खण्डकाव्य हिंदी में की गई रचना है । विमलकृष्ण 'नेपाली' के नाम से हिंदी साहित्य का सृजन करने वाले डॉ. शिवशंकर यादव प्रमुख हिंदी साहित्यकार हैं । इनका एक कविता संग्रह 'परकटे जटायु' और उपन्यास 'कबूतर' प्रकाशित हैं।

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में काव्य साहित्य के अतिरिक्त हिंदी गद्य में भी नेपाली लेखकों ने उल्लेखनीय योगदान किया है । हिंदी भाषा में वैचारिक साहित्य का प्रणयन नेपाली विद्वानों, साधुओं और राजनीतिज्ञों ने बहुत पहले से किया है । कुछ महत्वपूर्ण नामों में अमर शहीद शुक्रराज शास्त्री का नाम उल्लेखनीय है । उन्होंने हिंदी में अनेक ग्रंथ लिखे हैं । उनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध है 'ब्रह्मसूत्र शंकरभाष्य की हिंदी टीका' । इसकी प्रशंसा स्वयं महात्मा गांधी और नेता सुभाष चन्द्र बोस आदि ने की है । इसी तरह प्रसिद्ध समाजसेवी तथा राजनीतिज्ञ काशीप्रसाद श्रीवास्तव की 'नेपाल की कहानी' पुस्तक प्रकाशित है । नेपाल के नए लेखकों की विविध सामग्रियाँ अनेक हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में आज भी छपती रही हैं ।

वर्तमान समय में भी कविता, गीत, गज़ल, कहानी आदि के क्षेत्र में नेपाल के नव रचनाकारों की एक लंबी सूची हिंदी साहित्य में देखी जाती है, जिनमें महंथ रामटहल दास (जनकपुर), उत्तम नेपाली (काठमांडू), डॉ. सूर्यनाथ 'गोप' (सिरहा), डॉ. रामदयाल 'राकेश'(सर्लाही)- जिन्होंने हिंदी पद्य पराग, नेपाल के हिंदी लेखक, नई नेपाली कविताएँ (नेपाली कविताओं का अनुवाद), काला सूरज, लाल सूरज आदि अपनी कृतियों से नेपाल के हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में योगदान दिया है । इनके अलावा स्वयं डॉ. उषा ठाकुर (काठमांडू), राजेश्वर नेपाली (जनकपुरधाम), लोकेश्वरदत्त 'व्यथित' (काठमांडू), वसंत कुमार विश्वकर्मा (सप्तरी), अवध किशोर दास 'उमंग' (जनकपुरधाम), अवध किशोर लाल और सरयुग चौधरी (जनकपुरधाम), रुद्र नारायण भारती (धनुषा), रमेश प्रसाद मिश्र (नवलपरासी), जय नारायण झा 'जिज्ञासु' (धनुषा), बुन्नीलाल सिंह (सिरहा),

पूनम यादव (सिरहा), भाग्यनाथ गुप्ता (वीरगंज), पं. जीवेश्वर मिश्र (सिसौट, सर्लाही), देवनारायण साह (हरिपूर्वा, सर्लाही), गंगाप्रसाद 'अकेला', सुश्री रंजना कुंवर, अवध किशोर प्रसाद एवं रविन्द्र कुमार साह (जनकपुरधाम), एस.एल.शर्मा (भद्रपुर, झापा), राजेन्द्र शलभ (काठमांडू), संजीता वर्मा (काठमांडू), रवि शर्मा (काठमांडू), ब्रजलाल दास और विजय बंधु (गौर,रौटहट), जीतेन्द्र जीत (विराटनगर), श्यामलाल मिश्र (इनरुवा), डॉ. कृष्णचन्द्र मिश्र (जनकपुरधाम), भद्रकुमारी घले (काठमांडू), वीणा सिन्हा (काठमांडू), रामबहादुर महतो (जनकपुरधाम), हरेकृष्ण साह (रूपन्देही)। रामस्वार्थ ठाकुर (रतौली, महोत्तरी), अशोक कुमार सिंह (जलेश्वर), आर. डी. आज़ाद (रचना : तराई जल रही है), डॉ. सी. के. राउत (रचना : 'मधेश का इतिहास' और 'मधेश स्वराज्य') गोपाल 'अश्क' (वीरगंज), आदि हैं । इनकी कविता, गीत, गज़ल और गद्य रचनाएं प्रकाशित-अप्रकाशित रूप में हिंदी साहित्य की श्री वृद्धि में सहायक हैं । नेपाल के अन्य हिंदी लेखकों में श्यामानन्द सिंह (रचना : वर्तमान, कविताएँ श्यामानन्द की), राम हृदय प्रसाद (रचना – संत विभूति भजनियां बाबा : रामशरण दास,२०६८), डॉ. श्वेता दीप्ति (रचना– अनुभूतियों के बिखरे पल, कविता संग्रह) और रवीन्द्र साह (रचना – नेपाल में हिंदी : एक विवेचना) के नाम भी उल्लेखनीय हैं ।

इस तरह अनेक कठिनाइयों को पार करते हुए नेपाल के युवा हिंदी लेखक और कवि अब तक अपनी साहित्य साधना सें आधुनिक काल में भी हिंदी साहित्य की श्री वृद्धि में योगदान करते आ रहे हैं ।

तृतीय परिच्छेद

डॉ. उषा ठाकुर

३.१ डॉ. उषा ठाकुर : जीवनी का अध्ययन

जीवनी का सामान्य अर्थ है किसी पात्र के जीवन पर्यंत का स्थूल इति वृत्त या जीवन चरित्र । समीचीन जीवनी सृजन के लिए इतिहास की तरह कोरी विवरणात्मकता, पूर्वाग्रह एवं ईर्ष्या आदि की उपेक्षा आवश्यक है । साथ ही कहानी की तरह इसमें काल्पनिकता का पुट भी अनपेक्षित है ।

किसी व्यक्ति के जीवन से संबंधित महत्वपूर्ण घटनाओं की तथ्य पूर्ण प्रस्तुति जीवनी का मुख्य ध्येय है । मनुष्य के जन्म से मृत्यु तक की समयावधि में घटित घटनाओं की समष्टि को सामान्यत: जीवनी या ज़िंदगानी कहा जाता है । जन्म से मृत्यु पर्यंत पात्र द्वारा किए गए कार्य, सेवा, उसकी शिक्षा-दीक्षा, संस्कार, कर्म, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक गतिविधि, साहित्यिक क्रियाकलाप और उसकी मान्यता तथा धारणा जैसे जीवन से संबंधित विविध पक्षों का अध्ययन जीवनी में किया जाता है । प्रस्तुत शोध शीर्षक में साहित्यकार डॉ. उषा ठाकुर के जीवन से संबंधित साहित्यिक क्रियाकलाप एवं सृजनशील कृत्यों का अध्ययन किया गया है ।

३.२ जन्म और जन्म स्थान

डॉ. उषा ठाकुर का जन्म सन् १९५१ जून ६ तारीख को एक संभ्रांत व्यवसायी परिवार में पटना में हुआ । उनके जन्म से कुछ ही समय पहले तक उनका परिवार पुरानी दिल्ली के चाँदनी चौक में रहता था । बाद में उनका परिवार बिहार की राजधानी पटना के पटना सिटी (इलाके का नाम) में स्थानांतरित हो गया । उनके पिता का नाम स्व. किशोरी लाल शर्मा और माता का नाम स्व. कैलास देवी शर्मा है ।

३.३ वंश परंपरा

व्यवसायी परिवार में जन्मी उषा अपने माता-पिता की चार संतानों में से दूसरी संतान हैं । पांचाल ब्राह्मण उषा का पैत्रिक गोत्र शांडिल्य है । उनकी सामान्य वंशावली इस प्रकार है :

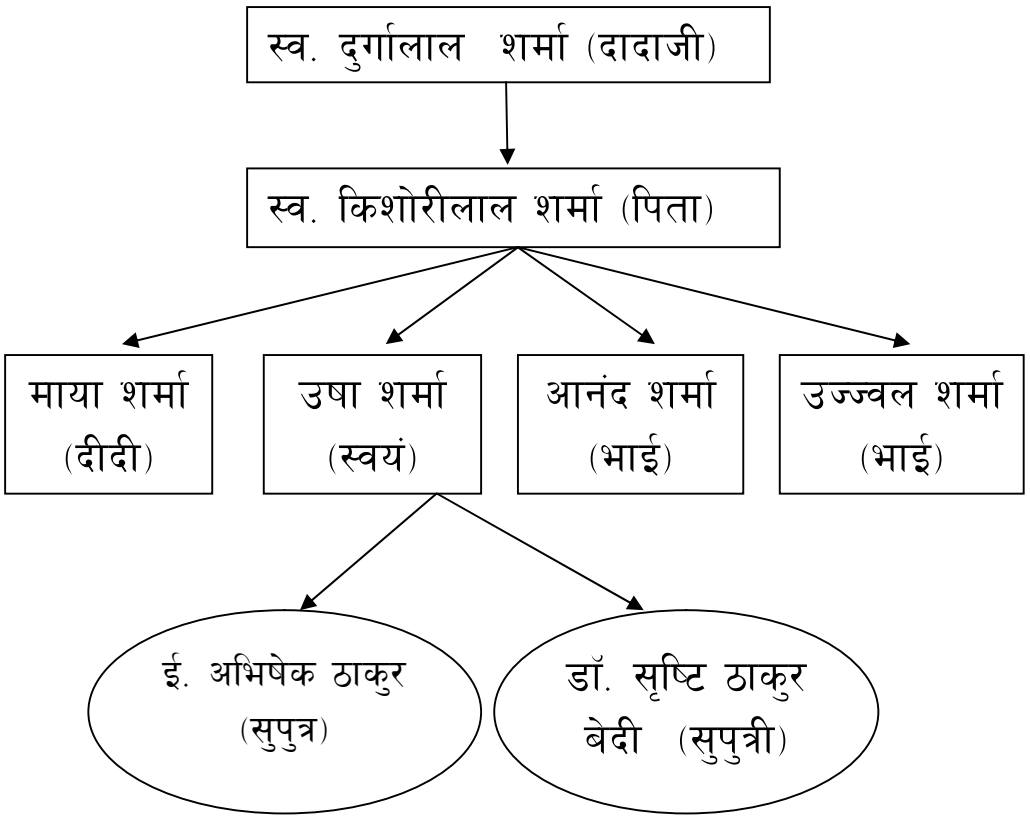

पुत्रवधू : श्रीमती रेणु ठाकुर दामाद :डॉ. विकास बेदी

३.४ बाल्यावस्था

सुसंपन्न परिवार में पली बढ़ी उषा का बाल्य काल भौतिक सुख-सुविधा एवं बड़े लाड़-प्यार से बीता । अपने माता-पिता और बड़ी बहन के लाड़-प्यार व ऐशो आराम में पलने के बावजूद वह बड़ी शांत और गंभीर स्वभाव की रहीं, इसलिए परिवार में सबकी

स्नेह पात्र बनी रहीं । आम तौर पर बचपन चंचलता और शरारत का पर्याय माना जाता है, पर उषा का बचपन उषा काल की भाँति शांति और एकांति का आभास कराते हुए बीता । वह बचपन से ही अध्ययनशील और चिंतनशील स्वभाव की रही हैं । पढ़ाई में उनकी रुचि को देखते हुए परिवार का कोई भी सदस्य उन्हें किसी पारिवारिक काम के लिए कहता भी न था । खास तौर पर उनकी माँ ने सबको हिदायत दे रखी थी कि उषा जब अपनी किसी शैक्षिक गतिविधि में व्यस्त हो तो किसी और काम के लिए उसे प्रेरित न किया जाय, वरना वह काम होने के बजाय बिगड़ जाएगा ।

अपनी गंभीरता, शिष्टाचारिता व अध्ययननिष्ठता की वजह से वह अपने शिक्षकों और खास तौर पर स्कूल की प्रिंसिपल की चहेती छात्रा के रूप में रहीं । उनकी प्रिंसिपल, जो आजीवन अविवाहिता ही रहीं, ने तो उनकी माँ से इतना तक कह दिया कि वह उषा को गोद लेना चाहती हैं । पर इस आग्रह को सिर्फ़ हास्य-विनोद व बालिका उषा की प्रशंसा के रूप में लिया गया । खाने के मामले में उषा किसी प्रकार का पूर्वाग्रह नहीं रखतीं । जो कुछ मिल जाए, उसे संतोष पूर्वक खा लेने का स्वभाव उषा का बचपन से ही है ।

अनिवार्य विषय अध्ययन के अलावा स्कूल के अतिरिक्त क्रियाकलाप में भी उनकी विशेष रुचि रहती थी । बाल्य काल से ही उनमें प्रतिस्पर्धा की भावना है । विद्यालय स्तरीय प्रतियोगिताओं में वह बढ़ चढ़कर हिस्सा लेतीं और उच्च स्थान भी प्राप्त करतीं । खेलने से विशेष लगाव उन्हें कभी न हुआ । इन बातों से उनके अंतर्मुखी स्वभाव का परिचय मिलता है ।

३.५ किशोरावस्था

बचपन से लेकर किशोरावस्था या यों कहें विवाह न होने तक उषा के जीवन में कोई उल्लेख्य परिवर्तन नहीं आया । वही पारिवारिक अवस्था, परिवार से लेकर गुरुजन, इष्ट मित्रों के सद्भाव के सुख का दौर उनके जीवन में चलता रहा । बुद्धि की तीव्र, गंभीर व मेहनती तो वह थीं ही, अब वयसगत चेतना व कल्पनाशीलता भी विकसित हो

रही थीं । परिणामत: अब वह विद्यालय के अतिरिक्त क्रियाकलाप में प्रतिस्पर्धी होने के साथ-साथ उन्हें संयोजन करने की भूमिका भी निभाने लगी थीं । निम्न माध्यमिक स्तर में पहुँचने के बाद वह छात्र कार्यकारिणी समिति की सचिव भी बनीं । बाल्यकाल से लेकर माध्यमिक विद्यालय स्तर तक वह कक्षा में हमेशा प्रथम आती रहीं । इस कारण विद्यालय से कॉलेज जीवन तक निरंतर उन्हें मेधावी छात्रवृत्ति मिलती रही ।

सन् १९६६ में बिहार हितैषी पुस्तकालय द्वारा राज्य स्तरीय वक्तृत्व कला प्रतियोगिता आयोजित की गई थी, जिसका शीर्षक था 'रामचरित मानस में भ्रातृ चेतना' । इस प्रतियोगिता में प्रथम आने के प्रसंग से जोड़कर उषा के शैक्षिक कीर्तिमानों के लिए बिहार के तत्कालीन राज्यपाल देवकांत बरुआ ने उन्हें 'बेस्ट स्टूडेंट ऑफ दी स्कूल' सम्मान से विभूषित किया था । इसके अलावा सन् १९६७ में 'विद्यार्थियों को राजनीति में भाग लेना चाहिए या नहीं' विषयक राज्य स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में विपक्ष की ओर से प्रथम आने पर उन्हें उषा सिलाई मशीन देकर पुरस्कृत किया गया था ।

सभी विषयों में उनकी दक्षता को देखते हुए उनकी शिक्षिकाओं ने उन्हें बोर्ड के बाद मेडिकल को लक्षित करने की सलाह दी थी । मगर उषा ने हिंदी साहित्य को ही अपना ध्येय बनाया । इसके दो कारण बताते हुए डॉ. उषा ने बताया, "एक तो हिंदी साहित्य में मेरी गहरी रुचि थी, दूसरा मेरे परिवार में सभी वैष्णव थे और मैंने सुना था कि मेडिकल पढ़ाई के दौरान मेंढ़क-वेंढ़क की चीर-फाड़ करनी पड़ती है, सो मैंने हिंदी साहित्य में ही अपना लक्ष्य स्थापित किया ।"

३.६ शिक्षा-दीक्षा

डॉ. उषा ठाकुर का अक्षरारंभ घर पर ही उनकी बड़ी बहन माया शर्मा के संसर्ग में सन् १९५३ में हुआ । परंतु उनके अध्ययन की औपचारिक शुरूआत पटना सिटी स्थित वालिका विद्यालय में सन् १९५४ में हुई तदुपरांत तीन वर्षों के बाद 'नारायणी कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पटन सिटी में उनकी पढ़ाई निरंतर रूप से आगे बढ़ती रही । विद्यालय में दाखिला होने के बाद अपनी प्रतिभा व लगनशीलता के बदौलत

उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा । बल्कि हमेशा हर कक्षा में अव्वल आती रहीं । इसलिए उन्हें स्कूल से कॉलेज तक निरंतर मेधावी छात्रवृत्ति मिलती रही । सन् १९६७ में उन्होंने बिहार विद्यालय परीक्षा बोर्ड अंतर्गत नारायणी कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से मैट्रिक उत्तीर्ण कर पटना विश्वविद्यालय से सन् १९६८ में प्रमाणपत्र (तत्कालीन प्री आर्ट्स) उत्तीर्ण किया । इसके अनंतर सन् १९७२ में पटना यूनिवर्सिटी से हिंदी साहित्य में स्नातक प्रतिष्ठा (बी ए ऑनर्स, प्रथम श्रेणी में) उत्तीर्ण किया । सन् १९७५ में पटना यूनिवर्सिटी से एम ए प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने 'पंत काव्य की सामाजिक भूमिका' शीर्षक पर अनुसंधान कर सन् १९७९ में विद्यावारिधि (पीएच डी) की उपाधि प्राप्त की । पीएच डी करने के दौरान उन्हें यू जी सी स्कॉलरशिप मिलती रही । पी एच डी शोध कार्य में संलग्न उषा अपने शोध संबंधित प्रश्नों और जिज्ञासाओं को लेकर छायावाद के आधारस्तंभ सुमित्रानंदन पंत को पत्र लिखा करती थीं और पंत उन पत्रों का जवाब देकर उनका मार्गदर्शन किया करते थे । उनके पत्र की प्रतिलिपि उपसंहार खंड में संलग्न किया गया है । फ़िलहाल वह डी लिट् के लिए प्रयासरत हैं ।

३.७ स्वाध्ययन

डॉ. उषा ठाकुर औपचारिक शिक्षा की अनिवार्यता के साथ-साथ स्वाध्ययन में भी गहरी रुचि एवं निष्ठा रखती हैं । उनकी मान्यता में औपचारिक शिक्षा ज्ञान का आधार है तो स्वाध्ययन उसकी निखार । और निखार की इस प्रक्रिया में उन्होंने अपने अब तक के जीवन काल में अनेक ग्रंथों का स्वाध्ययन किया है । स्वाध्ययन के क्रम में विशेष कर समालोचना, काव्यशास्त्र, इतिहास और दर्शन साहित्य का उन्होंने अधिक अध्ययन किया है । यही वजह है कि उनके लेख एवं रचनाओं में उनके विशेष अध्ययन का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है ।

३.८ विवाह

प्रा. डॉ उषा ठाकुर का विवाह वि. सं. २०३१ में पारंपरिक विधि से नेपाल के वीरगंज निवासी काश्यप गोत्रीय स्व. भरत प्रसाद ठाकुर के सुपुत्र डॉ. रामभक्त ठाकुर के साथ संपन्न हुआ ।

३.९ संतान

प्रा. डॉ. उषा ठाकुर के एक पुत्र एवं एक पुत्री हैं । उनकी संतानों में ज्येष्ठ पुत्र तथा कनिष्ठ पुत्री हैं । पुत्र अभिषेक ठाकुर इंजिनियरिंग करने के बाद एम बी ए करके अपने निजी व्यवसाय के साथ एम बी ए की कक्षाओं में प्राध्यापन करते हैं । और पुत्री डॉ. सृष्टि ठाकुर 'प्रसूति रोग' विषय से पी. जी. करके अपने क्षेत्र में विशिष्टता प्राप्त करने के लिए थेसिस लिखने के साथ की चिकित्सा क्षेत्र में कार्यरत हैं ।

३.१० निवास

डॉ. ठाकुर का पुस्तैनी घर नेपाल में पर्सा ज़िले के वीरगंज, रेशमकोठी, वार्ड नं. ७ में है । विवाह के कुछ ही समय बाद वह अपने पति के साथ उनके कर्म स्थल काठमांडू आ गईं । कुछ सालों तक किराए के मकान में रहने के बाद उनका काठमांडू में अपना घर बन गया । काठमांडू में उनका घर घट्टेकूलो, राधाकृष्ण चौक पर स्थित है । उनके मकान का नंबर ३ है ।

३.११ जीवन यापन तथा सेवा

डॉ. उषा ठाकुर सेवा के तौर पर मुख्य रूप से अध्यापन से ही जुड़ी रहीं । उनके अध्यापन कार्य की शुरूआत तब हुई, जब वह विद्यावारिधि कर रही थीं । विद्यावारिधि करने के दौरान उन्हें पटना यूनिवर्सिटी से स्कॉलरशिप के तौर पर उसी यूनिवर्सिटी में ट्यूटोरियल व अन्य कक्षाओं में अध्यापन करने का अवसर प्राप्त हुआ था । दीर्घकालीन या स्थायी पेशे के रूप में वि. सं. २०३६ से त्रिभुवन विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में नियुक्त हुईं डॉ. उषा वि. सं. २०५१ साल से प्राध्यापक पद पर कार्यरत हैं और विगत

एक वर्ष से विभागाध्यक्ष भी हैं । इसके अलावा 'हिमालिनी', 'साहित्यलोक' आदि हिंदी साहित्यिक पत्रिकाओं का संपादन कार्य के साथ-साथ शैक्षिक अवकाश व भ्रमणों के दौरान अन्य देशों में जाकर उन्होंने अध्यापन कार्य किया है । चीन के पेकिंग (बीज़िंग) स्थित इंटरनैशनल कॉलेज में सन् १९८२ में उन्होंने अध्यापन किया । सन् १९८९ से १९९२ तक फ्रांस के पेरिस स्थित डॉफ़िन यूनिवर्सिटी में उन्होंने एम ए की कक्षाओं में हिंदी पढ़ाई ।

डॉ. उषा के अब तक के जीवन काल में सेवा के कई तरह के अवसरों ने उनके दरवाज़े पर दस्तकें दीं परंतु अध्ययन-अध्यापन में ही रमने वाली उषा ने उन्हें स्वीकार नहीं किया । पूर्व राजा ज्ञानेन्द्र के शासन काल में राष्ट्रीय महिला आयोग के अध्यक्ष पद के लिए सचिव का आग्रहपूर्ण फ़ोन आया परंतु उषा ने उसमें रुचि नहीं दिखाई । दूसरे, महिला मंत्री दुर्गा श्रेष्ठ के माध्यम से सहायक मंत्री पद के लिए वि. सं. २०६२ में उनके पास आग्रह आया पर डॉ. ठाकुर ने अध्यापन को ही श्रेष्ठ समझा । इसके बाद वि. सं.२०६० चैत ४ गते को यूनेस्को, पेरिस (फ्रांस) के लिए टैलेंट बैंक ऑफ वुमन विथ इंटरनैशनल सोशल एक्सपर्टीज पद के लिए वह चुनी गईं । और इसके लिए उनके पास बधाई भरा आग्रह पत्र भी आया, जिसकी प्रतिलिपि उपसंहार खंड में प्रस्तुत है । लेकिन परिवार के प्रति अपने नैतिक दायित्व बोध के कारण उस अवसर को भी उन्होंने अस्वीकार कर दिया ।

डॉ. उषा अध्यापन कार्य को विशेष महत्व देते हुए अब तक त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमांडू में प्राध्यापन पेशे से आबद्ध हैं । विश्वविद्यालय में अपनी कार्यकुशलता, विद्वत्ता और निष्ठा के कारण वह विशिष्ट एवं प्रतिष्ठित प्राध्यापकों में गिनी जाती हैं । डॉ. उषा का हिंदी अध्यापन क्षेत्र में विशिष्ट योगदान रहा है ।

३.१२ सामाजिक सक्रियता

डॉ. उषा ठाकुर में बाल्य काल से ही सामाजिक दायित्व का बोध है । प्राथमिक कक्षाओं से ही सहपाठियों की उचित मदद करना, विद्यालय के कार्यक्रमों में ज़िम्मेदार

स्वयंसेविका की भूमिका निभाना आदि उनके क्रियाकलाप से सामाजिक कार्य के प्रति उनकी गहरी रुचि उजागर होती है । उनके इसी क्रियाकलाप को दृष्टिगत करते हुए विद्यालय में उन्हें छात्र कार्यकारिणी समिति का सचिव बनाया गया था ।

गरीब व गरीबी के प्रति संवेदनशील उषा को विवाह से पहले विपन्नता का सामना कभी नहीं करना पड़ा था । अपना बड़ा-सा घर, गाड़ी, फोन आदि भौतिक सुविधाओं में जन्मी उषा विवाह होकर ससुराल आने के बाद जब वह काठमांडू आईं तो यहाँ अपना घर न होने के कारण किराए के छोटे-से मकान में रहते हुए बिज़ली-पानी के अभाव से उन्हें ग्रस्त रहना पड़ा । भीड़-भाड़ वाली सार्वजनिक गाड़ियों में यूनिवर्सिटी आना-जाना आदि अनेक भौतिक असुविधाओं का सामना उन्हें करना पड़ा, जब कि परराष्ट्र सेवा में होने कारण उनके पति भी अक्सर साथ नहीं हुआ करते थे । फ़िर भी वह विचलित नहीं हुईं और अपने कर्तव्यों का पालन करती रहीं । हाँ, दिल्ली के छात्रावास में रहकर ७-८ कक्षा में पढ़ रहे उनके इकलौते बेटे के बीमार होने की खबर सुनकर जब वह टेलिफोन एक्सचेंज या पी. सी. ओ. में भागी-भागी जाती थीं तब उनका हृदय विदीर्ण हो उठता था । इन अनुभवों ने गरीबों के प्रति उनकी भावुकता में मल-जल का काम किया । गरीब विद्यार्थियों को आर्थिक सहयोग करना, विपन्न की बेटी की शादी व उनके स्वास्थ्योपचार में आर्थिक सहयोग करने में उन्हें आत्मिक सुख की अनुभूति होती है । ऐसे कामों के लिए किसी सामाजिक संघ-संस्थाओं में हिस्सेदारी करने के बजाय व्यक्तिगत भूमिका निभाने में वह अधिक आस्थावान हैं ।

३.१३ राजनीतिक संलग्नता

राजनीति के प्रति डॉ उषा कभी आस्था न रख सकीं । नीति की परिभाषा देते हुए नीति शास्त्रियों ने कहा है– “नीयते प्राप्यते अनया धर्मादि चतुर्वर्गाः इति नीतिः” अर्थात जिस नियम से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति हो, वही नीति है । परंतु हिंदू धर्म व संस्कृति के प्रति गहरी आस्था रखने वाली उषा ने आधुनिक राजनीति में इस तरह के संकेत नहीं पाए, इसलिए राजनीति के प्रति वह उदासीन ही रहीं । शायद

इसी अंतर्भाव के कारण सन् १९६७ में 'छात्रों को राजनीति में भाग लेना चाहिए या नहीं' विषयक बिहार राज्य स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में विपक्ष की ओर से की वक्तृता में उन्हें प्रथम स्थान प्राप्त हुआ था ।

३.१४ साहित्यिक संलग्नता

३.१४.१ साहित्य सृजन के लिए प्रभाव और प्रेरणा

डॉ. उषा को बचपन से ही साहित्य से लगाव था । छायावादी काव्यों से वह सर्वाधिक प्रभावित थीं । इसके अलावा उनकी बड़ी बहन माया शर्मा, जो कि हिंदी से स्नातकोत्तर व एक कुशल कवयित्री भी हैं, उषा को स्वरचित के अलावा निराला की कविताएँ सुनाया करती थीं । खास तौर पर निराला की 'जूही की कली' शीर्षक कविता को कुछ ऐसे भाव-भंगिमाओं के साथ वाचन करती थीं कि वह भाव-विभोर हो उठती थीं । उनसे वह साहित्य सृजन के लिए सर्वाधिक प्रभावित हुईं । सर्वप्रथम साहित्य सृजन की प्रेरणा स्रोत के रूप में उषा अपने विद्यालय की प्राचार्या डॉ. अन्नपूर्णा देव को स्मरण करती हैं । विद्यालय जीवन में प्राचार्या डॉ. देव ने उन्हें सृजन की प्रेरणा देते हुए डायरी लेखन का सुझाव दिया था । इसके अलावा वह रेडियो वक्तृता आदि के लिए उषा को प्रेरित किया करती थीं । उनकी प्रेरणा से उन्होंने सन् १९७५ में आकाशवाणी पटना से 'आँसू बन गए फूल' कहानी (स्वरचित) का वाचन किया था ।

विवाहोपरांत नेपाल आने के बाद वह नेपाली कवियों एवं साहित्यकारों से प्रभावित होती रहीं । उन साहित्यकारों में महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा, सिद्धिचरण श्रेष्ठ, माधवप्रसाद घिमिरे, केदारमान व्यथित, धुस्वाँ सायमी, लोकेन्द्रबहादुर चंद (पूर्व प्रधानमंत्री) आदि शामिल हैं । इनके संबंध में डॉ. उषा के कई लेख-रचनाएँ गोरखापत्र में वि. सं. २०३६ से प्रकाशित होते रहे हैं ।

३.१४.२ साहित्य रचना और प्रकाशित कृतियाँ

डॉ. उषा ठाकुर की साहित्यिक प्रतिभा का प्रस्फुटन उनकी पहली कृति के रूप में 'नदी और नारी' शीर्षक कविता से सन् १९७० में हुआ । उस समय वह पटना विश्वविद्यालय में बी ए ऑनर्स कर रही २२/२३ साल की युवती थीं । उक्त कविता में नदी और नारी की संघर्षपूर्ण परिस्थिति के तुलनात्मक पक्ष को उन्होंने विषय-वस्तु के रूप में लिया था । यह कविता पटना से निकलने वाले दैनिक अखबार 'आर्यावर्त' में प्रकाशित हुई थी । इसी रचना से उनके सृजन की औपचारिक शुरूआत हुई थी । इसके बाद उनके द्वारा रचित कहानी 'आँसू बन गए फूल' सन् १९७५ में आकाशवाणी पटना से प्रसारित हुई थी । और इसके अनंतर उनकी लेखनी हिंदी और नेपाली दोनों भाषाओं के साहित्य सृजन में चलती रही ।

डॉ. उषा ठाकुर ने नेपाली भाषा में 'राष्ट्रीय जनजागरण र कवयित्री चाँदनी शाह' विषयक समालोचना से सृजन की शुरूआत की थी, जो वि. सं. २०४३ कार्तिक २२ गते के गोरखापत्र में प्रकाशित हुई थी । उनकी दूसरी नेपाली रचना के रूप में 'ज्योतिपुंज' कविता थी । वह भी गोरखापत्र में ही वि. सं. २०४५ पूस १४ गते प्रकाशित हुई थी । नेपाली अखबारों और साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में उनकी लगभग ३०० से अधिकलेख-रचनाएँ प्रकाशित हैं ।

हिंदी एवं नेपाली भाषाओं में डॉ. उषा की पुस्तकाकार कृतियों का विवरण निम्नलिखित है :

हिंदी भाषा में प्रकाशित एवं प्रकाशनाधीन कृतियाँ

१) पंत काव्य की सामाजिक भूमिका – शोधपरक समालोचना (सन् १९९५)

२) हिंदी और नेपाली साहित्य के प्रतिनिधि हस्ताक्षर – समीक्षा संग्रह (सन् १९९८)

३) मरुभूमि का काँटा – हिंदी अनुवाद, कविता संग्रह (वि. सं. २०६०)

४) युगकवि सिद्धिचरण श्रेष्ठ की काव्य साधना – समालोचनात्मक संग्रह (वि. सं.२०६८)

५) महाकवि देवकोटा की काव्य साधना – समालोचनात्मक संग्रह (प्रकाशनाधीन)

६) संपादकीय संग्रह (प्रकाशनाधीन)

७) कविता संग्रह (प्रकाशनाधीन)

८) भूमिका संग्रह (प्रकाशनाधीन)

नेपाली भाषा में प्रकाशित एवं प्रकाशनाधीन कृतियाँ

१) नेपाली साहित्यको श्रीवृद्धिमा शाहवंशीय श्रष्टाहरूको योगदान – समालोचना (वि. सं.२०५९)

२) मरुभूमिका काँडा – बिम्ब प्रतिबिम्ब, संपादन (वि.सं. २०५९)

३) स्रस्टाको सिर्जना र द्रष्टाको समालोचनात्मक दृष्टि – समीक्षा संग्रह (वि. सं. २०५९)

४) भ्यालबाट हेर्दा – भूमिका संग्रह (प्रकाशनाधीन)

३.१५ पत्र-पत्रिका संपादन

डॉ. उषा ठाकुर ने निम्नलिखित दो साहित्यिक पत्रिकाओं का संपादन किया है:

१) हिमालिनी : तत्कालीन हिंदी साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका, वर्तमान में वह समसामयिक विश्लेषणात्मक मासिक पत्रिका के रूप में है (वि.सं. २०५४ से २०५७ तक)

२) साहित्यलोक : हिंदी साहित्यिक वार्षिक पत्रिका, त्रि. वि. हिंदी विभाग (सन् १९८७, १९९२ और १९९३)

३.१६ सम्मान तथा पुरस्कार

अलग-अलग संघ संस्थाओं के द्वारा उषा को विभिन्न काल क्रम में सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया है । हाल तक उनके द्वारा अभिगृहीत राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार निम्नलिखित हैं :

१) बिहार (भारत) के राज्यपाल माननीय श्री देवकांत बरुआ के द्वारा विद्यालय की उत्कृष्ट छात्रा के रूप में सम्मान तथा अभिनंदन पत्र (सन् १९७३)

२) पटना में आयोजित अंतरविद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार (उषा सिलाई मशीन) तथा प्रमाण पत्र (सन् १९६७)

३) महेन्द्र विद्याभूषण प्रथम (वि. सं. २०३८)

४) नेपाल महिला साहित्यकार संघ के द्वारा आयोजित प्रतियोगितात्मक कवि गोष्ठी में प्रथम पुरस्कार, सम्मान तथा प्रमाण पत्र (वि. सं २०४१)

५) रत्न श्री स्वर्ण पदक (वि. सं. २०४५)

६) 'हाम्रो नेपाल' संस्था द्वारा नेपाली साहित्य में विशिष्ट योगदान के लिए सम्मान तथा पुरस्कार (वि.सं. २०५६)

७) जनकपुर बौद्धिक समाज द्वारा हिंदी साहित्य में विशिष्ट योगदान के लिए सम्मान तथा पुरस्कार (वि. सं. २०५६)

८) वीरेन्द्र ऐश्वर्य पदक (वि. सं. २०५८)

९) त्रिभुवन विश्वविद्यालय द्वारा दीर्घ सेवा पदक (वि. सं.२०६२)

१०) नेपाली साहित्य में विशिष्ट योगदान के लिए 'भद्रकुमारी घले सेवा सदन' द्वारा अभिनंदन एवं पुरस्कार (वि. सं. २०६२)

११) 'नवदेवी सम्मान' अंतर्गत नेपाली साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान के लिए भगवती पुरस्कार (वि. सं. २०६२)

१२) छठे अंतरराष्ट्रीय हिंदी उत्सव के अवसर पर 'अक्षरम्' नई दिल्ली के द्वारा अक्षरम् हिंदी साहित्य सम्मान (सन् २००८)

१३) नेपाली शिक्षा तथा साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए नइ खरा प्रदीप्ति पुरस्कार रु. ५०,००० सहित सम्मान पत्र, (वि. सं. २०६७,वैशाख)

३.१७ सेमिनार और कॉन्फ्रेंस

१) प्रेमचंद का साहित्यिक व्यक्तित्व – बीजिंग विश्वविद्यालय, बीजिंग, चीन (२३ मार्च १९८३)

२) हिंदी काव्य में छायावाद – डॉफ़िन विश्वविद्यालय, पेरिस, फ्रांस (२८ अप्रैल १९८९)

३) केदारमान व्यथित अभिनंदनका लागि अंतर्देशीय सम्मेलन, काठमांडू – 'कवि व्यथित की हिंदी काव्य साधना' विषयक पत्र प्रस्तुति (२९ नवंबर १९९३)

४) राहुल सांकृत्यायन शताब्दी समारोह – काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, पटना (१२-१३ मार्च १९९४)

५) फणीश्वर नाथ रेणु की काव्य साधना – विराटनगर (१६-१७ सितंबर १९९५)

६) हिंदी नेपाली साहित्यकार सम्मेलन (स्वयं द्वारा व्यवस्थापन-संचालन एवं पत्र प्रस्तुति) – प्रज्ञा प्रतिष्ठान, काठमांडू (१८-१९ दिसंबर १९९९)

७) सार्क साहित्यकार सम्मेलन – नई दिल्ली, भारत (२८-३० अप्रैल २०००)

८) सुषमा कोइराला ट्रस्ट द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार (वुमन राइटर्स इन एशिया विषयक पत्र प्रस्तुति) – काठमांडू (७ अगस्त २००१)

३.१८ सदस्यता और सहभागिता

१) पूर्व महासचिव – डॉ. कृष्णचन्द्र मिश्र अकादमी, काठमांडू

२) कार्यकारिणी सदस्य – डॉ. डिल्लीरमण रेग्मी साहित्यिक प्रतिष्ठान, काठमांडू

३) आजीवन सदस्य – नेपाल साहित्य मंदिर, काठमांडू

४ आजीवन सदस्य – नारी साहित्य प्रतिष्ठान, काठमांडू

५) सदस्य – नइ प्रकाशन

६) मानार्थ सदस्य – त्रिमूर्ति निकेतन

७) सदस्य – महाकवि देवकोटा शताब्दी महोत्सव (त्रिमूर्ति निकेतन द्वारा आयोजित, कार्तिक २०६५ से चैत २०६६ तक

८) परामर्श दाता – 'नारी स्वरमा देवकोटाका कविता' (सीडी) वि.सं.२०६६

९) सदस्य, सहभागिता – प्रथम महिला अंतर्राष्ट्रीय शिखर सम्मेलन, शर्मशेख, इजिप्ट, सन् २००९

१०) सदस्य – त्रिमूर्ति निकेतन द्वारा आयोजित 'नेपाली भाषा साहित्य अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, काठमांडू, वि. सं. २०६७

११) अध्यक्ष – सत्यमोहन जोशी शताब्दी महोत्सव, काठमांडू, वि. सं. २०७१

१२) उपाध्यक्ष – विश्व नारी नेपाली साहित्य सम्मेलन, वि. सं. २०७१

१३) पदाधिकारी तथा संयोजक – संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित भानुभक्त आचार्य द्विशतवार्षिकी समारोह'

३.१७ भ्रमण

प्रा. डॉ. उषा ठाकुर ने नेपाल के कुछ ज़िलों व शहरों के अलावा भारत के कुछ मुख्य शहरों के साथ-साथ चीन, फ्रांस, थाइलैंड, जर्मनी, स्विट्ज़रलैंड, यूके बंगलादेश,

पाकिस्तान, इजिप्ट, ट्यूनिशिया, तंजानिया, साउथ अफ्रीका, केन्या, इथोपिया आदि देशों का भ्रमण किया है ।

३.१८ रुचि एवं स्वभाव

डॉ. उषा की रुचि भी उनकी वैयक्तिक सरलता के समान है । उनकी रुचि का एक बड़ा हिस्सा साहित्यिक क्रियाकलापों के प्रति समर्पित है । साहित्य, इतिहास, दर्शन, पत्र-पत्रिका आदि अध्ययन के अलावा साहित्यिक क्रियाकलाप से उनका विशेष लगाव है।

प्राच्य संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाली उषा को भोजन के तरह-तरह के पकवान बनाने में बड़ी दिलचस्पी है और स्वयं एक कुशल पाककार भी हैं । आगंतुकों को अपने हाथों से बनाए पकवानों की विविधता परोसने में उन्हें बड़ी खुशी मिलती है । परंतु स्वयं भोजन के मामले में काफ़ी साधारण हैं । शाकाहारी उषा को सामान्य भोजन में ही अधिक संतुष्टि का अनुभव होता है ।

वस्त्रों के चयन में वह पूर्वीय संस्कृति की झलक खोजती हैं । अत: वह विशेषत: साड़ी ही पहनती हैं । कभी-कभी वह सूट भी पहनती हैं ।

समाजसेवा से भी उनका विशेष लगाव है । ऐसे कार्यों के लिए किसी सामाजिक संघ-संस्था के माध्यम की अपेक्षा निजी तौर पर ही समाजसेवा करने में उन्हें अधिक आत्म तुष्टि मिलती है ।

प्रा. डॉ. उषा ठाकुर बहुत ही शांत और शालीन स्वभाव की हैं । उनके व्यवहार में सहज ही एक आदर्श मातृत्व के दर्शन होते हैं । अपने मृदु स्वभाव और मृदुभाषिता के कारण बचपन से अब तक वह अपने जानने वालों की प्रिय रही हैं । साथ ही वह जितनी सरल हैं, भीतर से उतनी ही दृढ भी । आत्मसम्मान एवं स्वाभिमान के प्रश्न में किसी तरह का समझौता करने में उन्हें असहज महसूस होता है । इसके अलावा वह स्वभाव से अंतर्मुखी भी हैं । बचपन में जब वह कोई रचना करती थीं तो अपने इसी अंतर्मुखी स्वभाव के कारण उस रचना को अपने दोस्तों तक को दिखा पाने में उन्हें बड़ी लाज

आती थी, झिझक होती थी । इसलिए अपनी रचना को सिर्फ़ अपने माता-पिता को दिखा या सुना पाती थीं । विवाहोपरांत उनके पहले पाठक या श्रोता उनके पतिदेव बने ।

३.१९ साहित्यिक धारणा

साहित्य के संदर्भ में उषा की धारणा है कि साहित्य सृजन इस प्रकार का हो, जो 'स्वान्तः सुखाय' के साथ-साथ 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' के अर्थों को सिद्ध कर सके । यानी साहित्य आत्म सुख प्रदाता होने के साथ-साथ समाज का उन्नायक और दिशा निर्देशक भी है । सदा से समाज के लिए साहित्य की बहुत बड़ी उपादेयता रही है । एक साहित्यकार का दायित्व है कि वह अपने सृजन के माध्यम से समाज की कुत्सित भावनाओं और कुरीतियों को दूर कर समाज में प्रकाश फ़ैलाए ।

जो काम बम के गोलों से नहीं हो सकता, वह एक साहित्यकार कर दिखा सकता है, जिसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है 'रामचरितमानस' । हिंदी साहित्य में कुछ इस तरह के प्रयास किए जाएँ, जिससे हिंदी साहित्य अपनी स्तरीयता, सक्षमता और गुणयुक्तता से विश्व साहित्य की पंक्ति में अपना स्थान निरंतर ऊपर उठाता रहे ।

"समाज महिला साहित्यकारों को स्थापित नहीं होने देता" इस कथन से उषा शत प्रतिशत सहमत नहीं हो पातीं । हो सकता है इसमें आंशिक सत्यता हो पर उनके विचार में महिला साहित्यकारों को अपने सृजन स्तर को उठाने की भी आवश्यकता है ।

३.२० जीवनी का निष्कर्ष

ईश्वर के प्रति आस्थावान उषा मानती हैं कि सुख और दुख जीवन के अनिवार्य अंग हैं । जीवन में केवल सुख या सफलता का आता रहना मनुष्य को दंभी बनाता है । इसलिए जीवन में दुख का आना भी आवश्यक है ताकि वह विचार को संतुलित बनाए रखे और दुख या विफलता से लड़ने का कौशल प्रदान करे ।

आम तौर पर मनुष्य में नकारात्मक ग्रंथि अधिक सक्रिय रहती है । इसलिए मनुष्य क्षणिक विफलता से ही विचलित हो उठता है । पर मनुष्य यदि सकारात्मक सोच रखे

तो वह यह सोचेगा कि अगर क्षणिक विफलता मेरे हाथ लगी है तो इतनी सारी सफलताएँ भी मैंने ही प्राप्त की हैं । उदाहरण के लिए आधा ग्लास पानी को कोई कहता है, "वह आधा खाली है" और कोई उसे आधा भरा हुआ बताता है । बातें दोनों ही सही हैं, अंतर है तो सकारात्मक और नकारात्मक सोच का । इसलिए मनुष्य को आशावादी, आस्थावादी और सकारात्मक सोच रखनी चाहिए ।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

श्रीमद्भग्वद्गीता के इस श्लोक को आदर्श मानने वाली डॉ. उषा का मानना है कि मनुष्य में परोपकार, सेवा, करुणा, दया, शांति ये मानवीय गुण हों तो अमानवीय गुण हावी नहीं हो सकते । और तब उसके कर्मों के फल भी कल्याणकारी होंगे । एक-एक व्यक्ति अपना सुधार कर ले तो संसार सुधर जाएगा ।

चतुर्थ परिच्छेद

डॉ. उषा का व्यक्तित्व

४.१ पृष्ठभूमि

मनुष्य का व्यक्तित्व उसकी अंतर्चेतना, समकालीन परिस्थिति, पारिवारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक-सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिवेश, शिक्षा-दीक्षा तथा वैयक्तिक अनुभूतियों का परिणाम रूप होता है । इसके अलावा उसके शारीरिक स्वरूप, प्रतिभा, विचार-व्यवहार, बोल-वचन आदि भी उसके व्यक्तित्व के अंग माने जाते हैं । किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके आंतरिक स्वरूप, योग्यता, सदाचार, परोपकार, समाजसेवा, सत्यनिष्ठता आदि के आधार पर सुनिश्चित होता है । व्यक्तित्व मनुष्य के भीतर का वह अस्तित्व है, जो विषम परिस्थिति में भी समता खोज लेता है । समग्र में मनुष्य का चक्षु-दृश्य एवं अंतर्दृश्य या अदृश्य गुणों का समाहार ही व्यक्तित्व है ।

४.२ उषा के व्यक्तित्व के आयाम

प्रा. डॉ. उषा ठाकुर ने साहित्य को ध्येय, साध्य और साधन तीनों रूपों में ग्रहण किया है । किसी भी आलोचक के सृजन से उसके साहित्यिक व्यक्तित्व का पता तो चलता ही है, साथ-साथ उसके निजी व्यक्तित्व और जीवन दर्शन के एक बड़े हिस्से से अभिमुख होने का अवसर प्राप्त होता है । डॉ. उषा के व्यक्तित्व को निजी एवं सार्वजनिक दो भागों में विभक्त कर अध्ययन करने का प्रयास किया गया है ।

किसी व्यक्ति के निजी आचरण से संबद्ध व्यक्तित्व को निजी व्यक्तित्व कह सकते हैं । निजी व्यक्तित्व को बाह्य और आंतरिक दो भागों में विभक्त कर अध्ययन किया जा सकता है । बाह्य व्यक्तित्व के अंतर्गत व्यक्ति के शारीरिक आकार प्रकार के विषय में चित्रण किया जा सकता है । और आंतरिक व्यक्तित्व के अंतर्गत व्यक्ति में अंतर्निहित आचरण एवं शील-स्वभाव का अध्ययन किया जा सकता है ।

४.२.१ निजी व्यक्तित्व

अपने निजी आचरण से संबंधित व्यक्तित्व ही निजी व्यक्तित्व कहलाता है । मनुष्य का चाहे सामाजिक व्यक्तित्व हो, राजनीतिक व्यक्तित्व हो या साहित्यिक व्यक्तित्व, इनका अध्ययन करने के लिए भी मनुष्य का निजी व्यक्तित्व महत्वपूर्ण होता है । उपर्युक्त सभी व्यक्तित्वों में पात्र के निजी व्यक्तित्व का गहरा छाप अंकित होता है । सर्वांग ज्योतिष के दृष्टिकोण से देखा जाय तो व्यक्ति की शारीरिक बनावटों में भी आचरणिक गुण-अवगुण छिपे होते हैं । इस दृष्टि से भी निजी व्यक्तित्व में अंतर्निहित आंतरिक तथा बाह्य पक्षों का यथार्थ अध्ययन के लिए बाह्य आकार-प्रकार और उसके शील-स्वभाव, आचरण तथा प्रवृत्ति के आधार पर अवलोकन करना उपयुक्त होता है । तदनुसार ही यहाँ अध्ययन करने का प्रयास किया गया है ।

४.२.१.१ बाह्य व्यक्तित्व

प्रा. डॉ.उषा ठाकुर मझौले कद की हैं । गेहुँआ वर्ण, गोल चेहरा, काली आँखें, सुंदर नाक, हँसमुख चेहरा इनके बाह्य व्यक्तित्व के आकर्षण हैं । लगभग पाँच फ़ीट की कद वाली उषा सौम्य एवं गंभीर प्रकृति की हैं ।

४.२.१.२ आंतरिक व्यक्तित्व

मनुष्य का बाह्य व्यक्तित्व या शारीरिक बनावट क्षणिक आकर्षण या विकर्षण उत्पन्न कर सकता है । परंतु व्यक्तित्व का वास्तविक या स्थायी आकर्षण-विकर्षण उसके आंतरिक व्यक्तित्व यानी शील-स्वभाव पर ही निर्भर करता है । मनुष्य का बाह्य व्यक्तित्व चाहे जितना भी आकर्षक हो, उसकी वास्तविक पहचान का आधार नहीं होता । उसकी श्रेष्ठता या अधमता का आधार-स्तंभ उसका आंतरिक व्यक्तित्व ही होता है ।

बाहरी तौर पर डॉ. उषा ठाकुर सामान्य कद-काठी की होते हुए भी आंतरिक प्रतिभा एवं विचारों की दृष्टि से उनका कद असाधारण है । सभी वर्ग, समुदाय एवं जात के प्रति समभाव रखने वाली उषा मृदुभाषी हैं । संभ्रांत परिवार की बेटी एवं संभ्रांत

परिवार की ही कुलवधू होने के बावजूद उनके किसी भी व्यवहार या बोल-वचन से अहं के संकेत नहीं मिलते । उन्हें देखकर ऐसा नहीं लगता कि वह कभी क्रोधित भी होती होंगी । परंतु मानव प्रकृति के अनुसार कभी-कभी वह भी क्रोधित होती हैं । पर उनके क्रोध की प्रतिक्रिया थोड़ी अलग है । क्रोधावस्था में उनकी गंभीरता की मात्रा थोड़ी बढ़ जाती है पर बाह्य प्रतिक्रिया से उन्हें परहेज है ।

हमेशा हँसमुख दिखने वाली उषा विनम्र और मिलनसार स्वभाव की हैं । उनके विचार सहयोगी भावनाओं से भरे हैं । बेबस और लाचारों की मदद करने में उन्हें अधिक आनंद महसूस होता है । इसके साथ-साथ वह आत्मविश्वासी एवं दृढ स्वभाव की हैं ।

४.३ सार्वजनिक व्यक्तित्व

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अतः मनुष्य का व्यवहार भी समाज के अनुसार होना स्वभाविक है । कई बार किसी मनुष्य के आचरण, सृजन और देन समाज में आदर्श के रूप में स्थापित होते हैं तो कई बार किसी व्यक्ति का क्रियाकलाप समाज में भर्त्सनीय एवं घृण्य कृति के रूप में स्थापित हो जाता है । इन्हीं कारणों से समाज में उनके व्यक्तित्वों का सर्वमान्य मापदंड एवं मूल्यांकन स्वस्फूर्त रूप से तैयार होता है । और वही मापदंड उनके सार्वजनिक व्यक्तित्व कहलाते हैं । सार्वजनिक व्यक्तित्व के अंतर्गत भी किसी साहित्यकार के व्यक्तित्व को साहित्यिक और साहित्येतर दो भागों में रखकर देखा जा सकता है । इसी आधार पर यहाँ भी अध्ययन करने का प्रयास किया गया है ।

४.३.१ डॉ. उषा साहित्यकार के रूप में

डॉ. उषा ठाकुर के साहित्य सृजन की औपचारिक शुरूआत 'नदी और नारी' कविता से हुई थी । उक्त कविता उन्होंने १९७० में लिखी थी, जो कि पटना से निकलने वाले दैनिक समाचार पत्र 'आर्यावर्त' में उसी वर्ष प्रकाशित हुई थी । इसके बाद उनकी रचित कहानी 'आँसू बन गए फूल' सन् १९७५ में आकाशवाणी पटना से उन्हीं की आवाज़ में प्रसारित हुई थी । इसी तरह उनकी कविताएँ एवं शोधपरक समीक्षात्मक लेख नेपाल-भारत के ख्याति प्राप्त पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं । इसके अलावा उनके लेख, समालोचना, कविता, अनुवाद आदि प्रकाशित एवं प्रकाशनाधीन कृतियों की एक बड़ी सूची तैयार हो चुकी है ।

हिंदी एवं नेपाली साहित्य सृजन में लगभग चार दशकों से कलम चला रहीं डॉ. उषा ठाकुर की न सिर्फ़ नेपाली बल्कि भारतीय साहित्य जगत में भी एक विशिष्ट पहचान कायम है ।

४.३.१.१ डॉ. उषा समालोचक के रूप में

साहित्य की समालोचना विधा में विशेष अभिरुचि रखने वाली उषा के विचार में स्वस्थ आलोचना के लिए पूर्वाग्रह मुक्त होकर समीक्षा दृष्टि प्रस्तुत करना जितना आवश्यक है, युगबोध के साथ उसे एक नई राह दिखाना भी उतना ही अनिवार्य है । डॉ. उषा ठाकुर ने आलोचना कर्म के प्रति अपनी आत्म सजगता और चिंतन की गहराई की नींव पर अपने समालोचक व्यक्तित्व के निर्माण में सफल हुई हैं ।

उनकी पहली शोधपरक समालोचनात्मक रचना 'युगकवि पंत' 'अकादमी' पत्रिका में बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना से सन् १९७६ में प्रकाशित हुई थी । इसके उपरांत सन् १९९५ में उनकी शोधपरक पुस्तक 'पंत काव्य की सामाजिक भूमिका' प्रकाशित हुई । तदनंतर उनकी समालोचना हिंदी और नेपाली साहित्य के प्रतिनिधि हस्ताक्षर सन् १९९८ में प्रकाशित हुई । उन्होंने नेपाली भाषा के सिद्धहस्त कवि सिद्धिचरण श्रेष्ठ को

पात्र बनाकर वि. सं. २०६८ में 'युगकवि सिद्धिचरण श्रेष्ठ की काव्य साधना' नामक समालोचनात्मक ग्रंथ लिखा । 'महाकवि देवकोटा की काव्य साधना' नामक समालोचनात्मक संग्रह भी वह पूरा कर चुकी हैं, जो अब प्रकाशनाधीन है । डॉ. उषा ने हिंदी के अलावा नेपाली में भी फुटकर सहित समालोचनात्मक ग्रंथ लिखे हैं । उन्होंने उपर्युक्त समालोचनात्मक ग्रंथों में सरल, सटीक, निष्पक्ष एवं अनुकरणीय समालोचना प्रस्तुत की है । उन्होंने अपनी समालोचनात्मक कृतियों में लेखक, कृति एवं समाज इन तीनों के प्रति आवश्यक समालोचकीय दायित्व का निर्वाह किया है । यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है कि जून २००३ में सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन (सूरीनाम में) के अवसर पर भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा प्रकाशित 'विश्व हिंदी रचना' में विश्व की चुनी हुई रचनाओं को प्रकाशित किया गया था, जिसमें नेपाल से प्रतिनिधि रचना के रूप में प्रा. डॉ. उषा ठाकुर की 'सार्क की महिला साहित्यकार' समालोचनात्मक लेख को चुना गया था ।

इन कृतियों से प्रा. डॉ. उषा ठाकुर का समालोचक व्यक्तित्व स्थापित होता है ।

४.३.१.२ डॉ उषा कवयित्री के रूप में

डॉ. उषा का सृजन अधिकाधिक समीक्षा-समालोचना के प्रति समर्पित रहा है । किंतु साहित्य की अन्य विधाओं से भी वह अछूती नहीं हैं । उन्होंने नेपाली में ५५ और हिंदी में ५० कविताएँ लिखी हैं, जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं । उनमें से उपलब्ध हो सकी कुछ कविताओं की चर्चा यहाँ की जा रही है –

१) 'युगकवि सिद्धिचरण' (एक सय एक कवि : एक सय एक कविता, संपादक– देवी नेपाल, प्रकाशक– युगकवि सिद्धिचरण प्रतिष्ठान)

२) 'हरेक रात्रिपछि स्वर्णिम बिहान हुन्छ' (देश नदुखोस्, संपादक– संगीता गुरुङ्ग)

३) सुंदर शांत मेरा देश कहाँ (विश्व कविता दिवस २००२, प्रकाशक– 'लिजः' यूनेस्को, मार्च २००२)

४) 'नेतृत्व' (गगनाञ्चल, अप्रैल-जून १९९८)

५) प्रेम का औदात्य' (गगनाञ्चल, अक्टूबर-दिसंबर २०००)

६) 'दिग्भ्रमित मानव' (गगनाञ्चल, जुलाई-सितंबर १९९९)

७) 'पथिक' (गगनाञ्चल, अक्टूबर-दिसंबर १९९९)

८) 'बन्दूक र छाती' (कान्तिपुर, वि. सं २०५९, जेठ ११)

९) 'देवी माँ सहचरी प्राण' (युगश्री २०५२)

१०) 'ज्योतिपुञ्ज' (गोरखापत्र, पूस २०४५)

११) 'आधारभूत आवश्यकता' (समीक्षा, वि. सं. २०४४, आषाढ २४)

१२) 'प्रतीक्षा नए सूरज की' (द पब्लिक, वि. सं. २०७०)

वि. सं. २०४१ में नेपाल महिला साहित्यकार संघ द्वारा आयोजित देशव्यापी कविता प्रतियोगिता में उन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया था ।

उन्होंने अपनी कविताओं में प्रकृति, देशप्रेम, मानव प्रेम, समाज, शांति, सद्भावना, समानता, शोषित-पीड़ित, नारी दुर्दशा आदि को विषय-वस्तु बनाया है । उनकी कविताओं में समसामयिकता का वर्णन है, यथार्थ चित्रण है, दुख और पीड़ा का आर्त्तनाद है, प्रकृति का सौंदर्य और रम्यता का दिग्दर्शन है । साथ ही अध्यात्म, दर्शन चिंतन और आदर्श का आग्रह है । नारी अपने विविध रूपों माँ, बहन, पत्नी, बेटी, प्रेमिका आदि के साथ जगत् जननी और समाज को दिशा प्रदान करने वाली दिक्पुंज भी है । नारी के इसी दिव्य विराट आदर्श स्वरूप को प्रस्तुत करते हुए डॉ. ठाकुर ने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज को दिशा निर्देश किया है । देश का अतीत गान करते हुए, वर्तमान का यथार्थ गान करते हुए भविष्य के लिए भी प्रेरणाप्रद, उद्बोधपूर्ण एवं आलोकमय पथ दिखाकर उन्होंने देश सेवा, समाज कल्याण और मानव कल्याण की दिशा में अपने कवयित्री कर्म के प्रति पूर्ण ज़िम्मेदारी और ईमानदारी का निर्वाह किया है

निष्कर्षत: सहज, सरल भाषा में लिखित उनकी कविताएँ स्तरीय, बौद्धिक एवं उच्च कोटि की हैं । साथ ही भाव की गहराई, विषय की गहनता और प्रस्तुति की कोमलता ने उनकी कविताओं को उत्कृष्टता प्रदान की है ।

४.३.१.३ डॉ. उषा अनुवादक के रूप में

डॉ. उषा ने अनुवाद के क्षेत्र में भी अपनी कलम चलाई है । उन्होंने केशरी बज्राचार्य द्वारा नेपाली में लिखित 'मरुभूमिका काँडा' कविता संग्रह का हिंदी अनुवाद (मरुभूमि का काँटा) किया है । इसके अलावा उनकी अनूदित कृतियों में 'पद्मावती की कथा' (कहानी संग्रह, लेखक : पद्मावती) और 'बुद्ध की चिट्ठी अशोक के नाम' (निबंध, लेखक : कृष्णचंद्र सिंह प्रधान) शामिल हैं । बुद्ध की चिट्ठी अशोक के नाम निबंध हिमालिनी के अंक ३ १९९८ में प्रकाशित हुआ था ।

४.३.१.४ डॉ. उषा कहानीकार के रूप में

डॉ. उषा ठाकुर ने सबसे अल्प मात्रा में कहानी के क्षेत्र में कलम चलाई है । परंतु कहानी की अल्प रचना से ही उनकी कुशल कथाकारिता का परिचय मिलता है । उन्होंने अब तक तीन कहानियाँ लिखी हैं, जिनमें से 'आँसू बन गए फूल' आकाशवाणी पटना से प्रसारित हुई थी, इसकी चर्चा ऊपर हो चुकी है । बाकी दो कहानियाँ 'आत्मदाह' और 'टूटते जुड़ते रिश्ते' भारत के प्रसिद्ध कहानी लेखक डॉ. कामता कमलेश द्वारा संपादित कहानी संग्रह 'नेपाल की हिंदी कहानियाँ' में संग्रहित हैं । उनकी कहानियाँ सहज-सरल भाषा में होते हुए भी दिल को गहराई से छूती हैं । खास कर उनकी कहानियाँ नारी वर्ग को नई दिशा, नवीन शक्ति एवं नवीन चेतना देती हुई प्रतीत होती हैं ।

४.३.१.५ डॉ. उषा संपादक के रूप में

साहित्य क्षेत्र में संपादन भी एक महत्वपूर्ण आयाम है । संपादक पर ही किसी पुस्तक या पत्र-पत्रिका का समग्र संतुलन टिका होता है । आज की तिथि में हर दूसरा या तीसरा व्यक्ति संपादक है । पर हर संपादक में संपादकीय गुण है या नहीं, यह विश्वास

के साथ नहीं कहा जा सकता । इस कथन को पुष्ट करने के लिए विगत में एक विवादास्पद समाचार संप्रेषण की वजह से नेपाल में हुए दंगे का उदाहरण पर्याप्त होगा, जिसे ह्रतिक रोशन कांड के नाम से जाना गया । अगर पत्रकारिता की भाषा में कहा जाय तो पत्रकारिता का ABC (Accuracy Balance Credibility) का संपूर्ण उत्तरदायित्व एक संपादक के ज़िम्मे होता है ।

डॉ. उषा ठाकुर ने अपने संपादक जीवन में एक कुशल संपादक की भूमिका निभाने का प्रयास किया, जिसमें वह सफल भी रहीं । इसका प्रमाण है कि सन् २००३ में सातवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन (सूरीनाम) के अवसर पर विश्व के चुनिंदे साहित्यकारों के चुनिंदी रचनाओं का एक संग्रह 'विश्व हिंदी रचना' सांस्कृतिक साहित्यिक संबंध परिषद द्वारा प्रकाशित किया गया था, जिसमें डॉ. उषा ठाकुर के समसामयिक विषयक संपादकीय (हिमालिनी में लिखित) को भी स्थान दिया गया था ।

उन्होंने निम्नलिखित दो साहित्यिक पत्रिकाओं का संपादन किया है :

१) हिमालिनी : तत्कालीन हिंदी साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका, वर्तमान में वह समसामयिक विश्लेषणात्मक मासिक पत्रिका के रूप में है (वि.सं. २०५४ से २०५७ तक)

२) साहित्यलोक : हिंदी साहित्यिक वार्षिक पत्रिका, त्रि. वि. हिंदी विभाग (सन् १९८७, १९९२ और १९९३)

४.३.१.६ डॉ. उषा भूमिका लेखक के रूप में

डॉ. उषा ठाकुर ने विभिन्न साहित्यकारों की अनेक कृतियों के लिए भूमिकाएँ लिखी हैं, जिनमें उन्होंने प्रत्येक कृति के समष्टिगत भाव को समेटने का सफल प्रयास किया है । उनके द्वारा लिखित भूमिकाओं की फेहरिस्त निम्नलिखित है :

१) शारदा कालीन नारी स्रष्टाहरु : एक अवलोकन – 'शारदाका नारी स्रष्टाहरु' समालोचना संग्रह, लेखक : डॉ. गार्गी शर्मा, प्रकाशक : साहित्य कला मंदिर, वि. सं. २०६९

२) कायाकल्प : एक दृष्टि – 'कायाकल्प' महानाटक, लेखक : मदनदेव भट्टराई, वि. सं. २०५४

३) कवि भट्टराई र उनको समयको प्रतिबिम्ब : एक दृष्टि – 'समयको प्रतिबिम्ब' कविता संगालो, लेखक मदनदेव भट्टराई, वि. सं. २०५५

४) भद्रकुमारी घले की हिंदी कविताएँ : एक दृष्टि – 'भद्रकुमारी घले की हिंदी कविताएँ' कवयित्री : भद्रकुमारी घले, वि. सं. २०६२

५) जीवन स्मृति : एक संक्षिप्त परिचय – 'जीवन स्मृति' महाकाव्य, रचयिता : मदनदेव भट्टराई, वि. सं. २०५१

६) शारदाका कवितामा विद्रोहात्मक स्वर : एक दृष्टि – 'शारदाका कवितामा विद्रोहात्मक स्वर' समालोचना, लेखक : डॉ. गार्गी शर्मा, वि.सं. २०५८

७) लक्ष्मी देवी राजभण्डारीको काव्यसाधना : एक दृष्टि – 'लक्ष्मी देवी राजभण्डारीको काव्यसाधना' समालोचना, लेखक : डॉ. गार्गी शर्मा, वि. सं. २०५७

८) युगबोधले परिपूर्ण कविताहरु – 'अस्तित्व' कविता संग्रह, कवयित्री : भद्रकुमारी घले, वि. सं. २०६०

९) हिंदी कविता संग्रह 'नव नेपाल' : एक संक्षिप्त अवलोकन – 'नव नेपाल' कविता संग्रह, कवि : राजेश्वर नेपाली, वि. सं. २०६९

विभिन्न किताबों में लिखी इनकी भूमिका संक्षिप्त होते हुए भी सारगर्भित हैं

४.३.२ साहित्येतर व्यक्तित्व

डॉ उषा ठाकुर ने एक तरफ साहित्य के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान देकर जहाँ हिंदी एवं नेपाली साहित्य की समृद्धि में वृद्धि की है, वहीं दूसरी तरफ एक कुशल प्राध्यापक के रूप में अपना आदर्श परिचय प्रस्तुत किया है ।

४.३.२.१ डॉ. उषा प्राध्यापक के रूप में

डॉ. उषा ठाकुर ने अध्यापन की शुरूआत अपने छात्र जीवन से ही किया है । विद्यावारिधि करने के दौरान उन्हें स्कॉलरशिप के तौर पर पटना यूनिवर्सिटी में ट्यूटोरियल एवं अन्य कक्षाओं में अध्यापन करने का मौका मिला था । परंतु स्थायी या दीर्घकालीन प्राध्यापक के रूप में वह त्रिभुवन विश्वविद्यालय में वि. सं. २०३६ से सेवा प्रदान कर रही हैं । विश्वविद्यालय में अपनी कार्य कुशलता व विद्वत्ता के कारण वह विशिष्ट एवं प्रतिष्ठित प्राध्यापकों में गिनी जाती हैं । हिंदी अध्यापन के क्षेत्र में उनका उल्लेख्य योगदान रहा है ।

४.३.२.२ डॉ. उषा ठाकुर के विविध व्यक्तित्व निर्माण में परिवार का योगदान

डॉ. ठाकुर अत्यंत सभ्य एवं सुशिष्ट संस्कारों की हैं । उनके व्यक्तित्व में प्राच्य संस्कार एवं व्यावहारिकता और आधुनिक सभ्यता का अद्‌भुत समीकरण देखने को मिलता है । ऐसे समीकरण के निर्माण में किसी भी इंसान के जीवन में जाने अंजाने पारिवारिक पृष्ठभूमि की बड़ी भूमिका होती है, और यह बात डॉ. उषा पर भी चरितार्थ होती है । इस आधार पर यहाँ उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि के विषय में अध्ययन करने का प्रयास किया गया है ।

उनके दादाजी दुर्गालाल शर्मा अपने ज़माने में दिल्ली (भारत) के सफल बिजनस मैन थे । पुरानी दिल्ली के चाँदनी चौक में उनका बड़ा मकान था । उनके पिताजी किशोरीलाल शर्मा सैंट जैवियर्स से दसवीं पास थे और उन्होंने भी अपने व्यवसाय परंपरा को जारी रखा । उषा के दादाजी के अंग्रेज़ दोस्त हुआ करते थे, जिसका प्रभाव

उनके पिता के विचारों पर भी पड़ा । और इसी वजह से भारतीय संस्कृति का पूर्ण निर्वहन करते हुए भी उनके पिताजी के विचारों में आधुनिकता थी ।

डॉ. उषा ठाकुर की माँ ने स्कूली तौर पर तो महज नौवीं कक्षा तक ही औपचारिक पढ़ाई की थी । पर उनके बड़े भैया यानी उषा के मामा ने घर पर ही अपनी बहन के लिए अंग्रेज़ी और गणित विषयों के अध्ययन हेतु ट्यूशन की व्यवस्था कर रखी थी, जिससे उनका विषयगत ज्ञान आगे बढ़ पाया । उनके बड़े मामा के घर के आगे अंग्रेज़ों का एक बड़ा बंगला था और वे अंग्रेज़ उनके बड़े मामा के दोस्त थे । लिहाजा उनके घर पर अंग्रेज़ों का आना-जाना हुआ करता था, जिसका अप्रत्यक्ष प्रभाव माँ के जीवन पर भी पड़ा । अत: माँ के विचार भी भारतीय संस्कृति के पूर्ण पूरक होते हुए भी विचारों में संकीर्णता नहीं थी । यही वजह है कि डॉ. उषा अपनी माँ के घर में बेटी की तरह नहीं बल्कि बेटा की तरह पलीं । उनके माँ पिताजी उन्हें उषा बेटा ही बुलाया करते थे । उनके दोनों भाई आनंद शर्मा और उज्ज्वल शर्मा भी एम. कॉम. हैं ।

डॉ. उषा के पति डॉ. रामभक्त ठाकुर बी. एल., एम. ए., एम. कॉम. और पीएच. डी. हैं । लंबे समय से राजनयिक सेवा में लगे उनके पति के अब तक के जीवन का एक बहुत बड़ा हिस्सा पररा‍ष्ट्र सेवा में ही व्यतीत हुआ है । चीफ ऑफ प्रोटाकॉल (शिष्टाचार महिपाल) होने के बाद वे इजिप्ट के लिए आवासीय राजदूत होने के साथ-साथ साउथ अफ्रीका सहित इजिप्ट के आस-पास के १७ देशों के लिए नॉन-रैजिडेंशियल राजदूत नियुक्त हुए । इससे पहले कई बार फ्रांस और दिल्ली (भारत) के राजदूतावास में कार्यवाहक राजदूत होने का अवसर उन्हें प्राप्त हुआ । डॉ. उषा अपने पति के साथ विदेशों में जाती रहीं । उनके पति भी साहित्यिक रुचि रखने वाले व्यक्ति हैं तथा स्वयं भी कविता कहानी आदि लिखते हैं । गोरखापत्र आदि में उनकी कविताएँ प्रकाशित हैं । अपने युवा समय में उन्होंने अंचल स्तरीय कविता प्रतियोगिता में कई बार प्रथम पुरस्कार प्राप्त किए हैं । अत: विदेशों में भी अपने पति की अभिरुचि के कारण डॉ. उषा

वहाँ के साहित्यकारों से मिलती जुलती रही थीं और उनके निवास में साहित्यकारों की जमघट हुआ करती थी ।

डॉ. उषा के लिए विदेश भ्रमण अत्यंत महत्वपूर्ण रहे और साहित्य जगत में उनका ज्ञान क्षितिज व्यापक होता गया इजिप्ट के राजदूत पद से अवकाश प्राप्त होने के बाद वे परराष्ट्र मंत्रालय के सलाहकार नियुक्त हुए एवं वर्तमान में चुनाव आयुक्त के पद पर प्रतिष्ठित हैं ।

पंचम परिच्छेद

डॉ. उषा का कृतित्व

प्रा. डॉ. उषा ठाकुर ने हिंदी के साथ ही नेपाली साहित्य के क्षेत्र में अपनी लेखनी चलाई है । विशेषत: समालोचना के क्षेत्र कलम चलाने के साथ ही उन्होंने कहानी, कविता, अनुवाद आदि अनेक विधाओं में साहित्य सृजन किया है । यहाँ उनकी रचनाओं की चर्चा एवं सामान्य विश्लेषण किया गया है ।

५.१ डॉ. उषा की हिंदी साहित्य की प्रकाशित कृतियाँ

'नदी और नारी' कविता से साहित्य सृजन का औपचारिक आरंभ के बाद से अब तक उषा के दर्जनों आलेख एवं कविताओं सहित हिंदी में ८ पुस्तकाकार कृतियों में से ४ कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनका परिचय एवं संक्षिप्त विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

१) पंत काव्य की सामाजिक भूमिका – शोधपरक समालोचना (सन् १९९५)

२) हिंदी और नेपाली साहित्य के प्रतिनिधि हस्ताक्षर – समीक्षा संग्रह (सन् १९९८)

३) मरुभूमि का काँटा – हिंदी अनुवाद, कविता संग्रह (वि. सं. २०६०)

४) युगकवि सिद्धिचरण श्रेष्ठ की काव्य साधना – समालोचनात्मक संग्रह (वि. सं.२०६८)

पंत काव्य की सामाजिक भूमिका :

यह शोधपरक समीक्षात्मक ग्रंथ सन् १९९५ में अनुपम प्रकाशन पटना से प्रकाशित है । इस पुस्तक में ८ अध्याय हैं । प्रथम अध्याय में साहित्य की सर्जनात्मक प्रक्रिया और सामाजिक चेतना को परिभाषित करते हुए आधुनिक हिंदी साहित्य के विभिन्न युगों में

अभिव्यक्त सामाजिक चेतना की भावना को संक्षेप में दर्शाते हुए यह कहा गया है कि पंत में सामाजिक चेतना की भावना बहुत प्रखर और व्यापक है । और इस दृष्टि से पंत किसी विशेष युग के कवि नहीं बल्कि युग-युग के कवि के रूप में चिर स्मरणीय रहेंगे । इसके द्वितीय अध्याय में साहित्य और सामाजिकता का तुलनात्मक अध्ययन और चतुर्थ अध्याय में पंत की कविताओं का कालक्रमिक विवरण प्रस्तुत किया गया है ।

इसके पंचम अध्याय में युगकवि पंत की कविताओं में निहित जीर्ण परंपरा के प्रति विद्रोह, नवीनता का आग्रह, नारी के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण, शोषक और शोषित वर्ग का चित्रण, ग्राम्य जीवन की अभिव्यंजना, राष्ट्रीय भावना का विकास, अंतर्राष्ट्रीय एवं नव मानवतावादी दृष्टि, दार्शनिक चिंतन का अभिचित्रण आदि सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति का निदर्शन किया गया है ।

हिंदी और नेपाली साहित्य के प्रतिनिधि हस्ताक्षर :

यह पुस्तक सन् १९९८ में वाणी प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित है । 'हिंदी और नेपाली साहित्य के प्रतिनिधि हस्ताक्षर' में एक ओर जहाँ दोनों साहित्य के प्रतिनिधि साहित्यकारों के बारे में व्यापक दृष्टिकोण लेकर तटस्थता के साथ विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, वहीं मानववादी साहित्यकारों को सामने रखकर युगबोध के प्रति साहित्यकारों के दायित्व बोध को झकझोरा गया है ।

इस पुस्तक को तीन खंडों में विभक्त किया गया है । प्रथम खंड में भारतीय साहित्यकारों आदि कवि विद्यापति, साकेत, प्रेमचंद, पंत, निराला की काव्य विशिष्टता के साथ-साथ आधुनिक हिंदी काव्य की सामाजिक चेतना का विश्लेषण किया गया है । द्वितीय खंड में नेपाली साहित्य के प्रतिनिधियों महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा का जीवन दर्शन, कवि व्यथित की काव्यरचनाओं पर समालोचकीय दृष्टि प्रस्तुत करने के साथ ही राहुल सांकृत्यायन को नेपाल से जोड़कर अध्ययन किया गया है । इसके अलावा इस खंड में हिंदी कवि सुमित्रानंदन पंत और नेपाली कवि लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा का तुलनात्मक अध्ययन, नेपाली कवयित्री छिन्नलता की रचनाओं में निहित प्रेम और विरह-वेदना का

चित्रण, डॉ. कृष्ण चन्द्र मिश्र की हिंदी साहित्य उपासना की चर्चा आदि प्रस्तुत किए गए हैं । पुस्तक के तृतीय खंड में डॉ. उषा ने 'नेपाल में हिंदी' के संदर्भ में अपनी दृष्टि प्रस्तुत करने के साथ-साथ कवयित्री मिथिलेश कुमारी मिश्र के महाकाव्य 'देवयानी' और हिंदी में पद्यानूदित 'अमृत गीता' की समीक्षा प्रस्तुत की है ।

दोनों भाषाओं के शीर्ष साहित्यकारों के बारे में लिखी गई यह पुस्तक हिंदी और नेपाली भाषा के साहित्यकारों को विचार और अनुभूति के धरातल पर और अधिक निकट लाने की चेष्टा करती है । साथ ही उन्हें व्यापक फलक पर चिंतन की नई दिशा देती है और उनमें सृजनात्मक भाव-विकास को बढ़ावा देती है । इस पुस्तक में एक असल समालोचक की तरह डॉ. उषा ठाकुर ने पक्षपात रहित होकर तटस्थ भाव से अपनी समालोचनात्मक कलम चलाई है ।

मरुभूमि का काँटा :

डॉ. उषा ठाकुर द्वारा अनूदित 'मरुभूमि का काँटा' में कवयित्री केशरी बज्राचार्य द्वारा नेपाली भाषा में लिखित 'मरुभूमिको काँडा' कविता संग्रह की चौवन कविताओं का हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया गया है । साहित्यिक पत्रकार संघ काठमांडू द्वारा वि. सं. २०६० में इस पुस्तक का प्रकाशन हुआ है ।

इन कविताओं में नारी मन की पीड़ा और वेदना को उजागर करने का प्रयास है । इसके अलावा वर्तमान समाज की समस्याओं के चित्रण के साथ ही उनके समाधान के लिए प्रखर आवाज़ भी बुलंद की गई है । करुणा और शांति के प्रति विशेष आस्था और निष्ठा व्यक्त करते हुए विश्व बंधुत्व का अमर संदेश देने के क्रम में प्रेम, करुणा, ममता, सहिष्णुता, मैत्री और परस्पर विश्वास से परिपूर्ण एक सुंदर मंगलमय समाज की परिकल्पना की गई है ।

इन कविताओं का अनुवाद करके डॉ. ठाकुर ने हिंदी और नेपाली साहित्य की संबंध प्रगाढ़ता को और मज़बूत करने की दिशा में एक सफल प्रयास किया है । इस

हिंदी अनुवाद कार्य में कवयित्री केशरी बज्राचार्य की कविताओं में व्याप्त भावों की गंभीरता और सजीवता यथावत् कायम रही हैं तथा कवयित्री की मूल भावना की अक्षुण्णता जीवित रही है ।

युगकवि सिद्धिचरण श्रेष्ठ की काव्य साधना :

हिंदी भाषा में डॉ. उषा ठाकुर की नवीनतम कृति 'युगकवि सिद्धिचरण श्रेष्ठ की काव्य साधना' समीक्षा संग्रह वि. सं. २०६८ साल में युगकवि श्रेष्ठ के शतवार्षिकी उत्सव पर वी. पी. कोइराला भारत नेपाल प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित है । यह पुस्तक सात अध्यायों में विभाजित है और उन अध्यायों में कवि श्रेष्ठ के काव्यों के विविध पक्षों का समग्र रूप से विश्लेषण करने का पूर्ण प्रयास किया गया है । समालोचना के क्रम में तटस्थता तथा पूर्ण निष्पक्षता को केंद्र में रखकर तर्क संगत विवेचन करने की पूरी कोशिश की गई है ।

इस पुस्तक के प्रथम तथा द्वितीय अध्याय में क्रमशः कवि श्रेष्ठ के कवि व्यक्तित्व एवं जीवनी की चर्चा है तो तृतीय और चतुर्थ अध्याय में उनके जीवन दर्शन तथा उनके काव्य में स्वच्छंदतावाद की समीक्षा प्रस्तुत की गई है । इसके पंचम अध्याय में युगकवि श्रेष्ठ के काव्य में व्याप्त राष्ट्रीयता की भावना, क्रांति चेतना, दीन-दुखियों तथा शोषितों के प्रति सहानुभूति, नारी चेतना, प्रजातांत्रिक चेतना और मानवतावाद तथा विश्वबंधुत्व की भावना को उजागर करने की चेष्टा की गई है । षष्ठम अध्याय में उनके काव्य के शिल्प विधान पर प्रकाश डालते हुए सप्तम अध्याय में उपसंहार और परिशिष्ट प्रस्तुत है।

५.२ डॉ. उषा की नेपाली साहित्य की प्रकाशित कृतियाँ

डॉ. उषा ने नेपाली भाषा में ४ पुस्तकाकार साहित्यिक कृतियों का सृजन किया है । इनमें से प्रकाशित तीन कृतियों का परिचय एवं संक्षेप में विश्लेषण प्रस्तुत हैं ।

१) स्रस्टाको सिर्जना र द्रष्टाको समालोचनात्मक दृष्टि – समीक्षा संग्रह (वि. सं. २०५९)

२) नेपाली साहित्यको श्रीवृद्धिमा शाहवंशीय श्रष्टाहरूको योगदान – समालोचना (वि. सं.२०५९)

३) मरुभूमिका काँडा – बिम्ब प्रतिबिम्ब, संपादन (वि.सं. २०५९)

स्रष्टाको सिर्जना र द्रष्टाको समालोचनात्मक दृष्टि :

यह पुस्तक वि. सं. २०५९ में प्रकाशित हुई है । इसमें २३ प्रख्यात नेपाली साहित्यकारों के बारे में २३ शोधपरक समालोचनात्मक लेख समाविष्ट हैं । इस संग्रह में संग्रहित लेख वि. सं. २०४० से २०५९ के भीतर लिखे गए हैं ।

अलग-अलग समयों में लिखे गए इन लेखों में वैचारिक विधिता के साथ विधागत वैविध्य है । प्रा. डॉ. उषा ठाकुर ने इस पुस्तक में नेपाली एवं हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में योगदान देने वाले काव्य, महाकाव्य, कथा, निबंध, नाटक आदि और संबंधित रचनाकारों के प्रति सम्यक दृष्टि के साथ सर्वेक्षण और मूल्यांकन करने का प्रयास किया है ।

इस संग्रह में समाविष्ट लेखों के विवेचन-विश्लेषण में डॉ. उषा ने रचनाओं के तह तक पहुँचकर साहित्यकारों की जीवन दृष्टि, काव्य विषयक धारणा, रचनाकारों की परिस्थिति और परिवेश संबंधित विविध पहलुओं को सम्यक समझने का प्रयास किया है ।

नेपाली साहित्यको श्रीवृद्धिमा शाहवंशीय स्रष्टाहरूको योगदान :

वि. सं. २०५९ में प्रकाशित इस समालोचनात्मक ग्रंथ में प्रा. डॉ. उषा ठाकुर ने नेपाली साहित्य में शाहवंशीय विशिष्ट योगदानों को विस्तृत रूप में गहराई से विश्लषित करने का प्रयास किया है ।

इसके विवेचन विश्लेषण के क्रम में शाहवंशीय स्रष्टाओं जी शाह, महेन्द्र शाह, वीरेन्द्र शाह, चाँदनी शाह के गीत, कविताओं एवं अन्य रचनाओं में व्याप्त राष्ट्रीयता,

लोकसम्मति, जन आकांक्षा के स्वर, प्रेम की उदात्तता आदि भावों का तर्कपूर्ण मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है ।

मरुभूमिको काँडा (बिम्ब प्रतिबिम्ब) :

मरुभूमिको काँडा (बिम्ब प्रतिबिम्ब) डॉ. उषा ठाकुर द्वारा संपादित समालोचना संग्रह है । यह पुस्तक प्रतिनिधि प्रकाशन काठमांडू द्वारा वि. सं. २०५९ में प्रकाशित है ।

इस पुस्तक में कवयित्री केशरी बज्राचार्य द्वारा लिखित कविता संग्रह 'मरुभूमिको काँडा' के बारे में १३६ नेपाली साहित्यकारों के समीक्षात्मक मंतव्य प्रस्तुत किए गए हैं । साथ ही इस कविता संग्रह के बारे में गोरखापत्र, कान्तिपुर, जनसत्ता जैसे विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित मंतव्य समेटे गए हैं । इसके अलावा कुछ फोटो भी संकलित हैं । कवयित्री बज्राचार्य के साहित्यिक व्यक्तित्व की विशिष्टता को रेखांकित करने में निश्चय ही यह पुस्तक सहायक है । इस पुस्तक के माध्यम से केशरी जी के द्वारा किए गए सत्प्रयास का एक बहुमूल्य विहंगावलोकन हुआ है और उनके साहित्यिक प्रखर प्रतिभा का उचित सम्मान भी हुआ है ।

प्रस्तुत संपादित कृति के बारे में संपादक डॉ. ठाकुर का विचार है कि नेपाल के सुप्रसिद्ध विद्वान समालोचकों एवं साहित्यकारों द्वारा एक सृजनशील नारी प्रतिभा के साहित्यिक व्यक्तित्व और उनके योगदान का सुस्पष्ट एवं निष्पक्ष प्रक्षेपण इस संपादित कृति के द्वारा हो पाया है ।

षष्ठम परिच्छेद

उपसंहार

डॉ. उषा ठाकुर का जन्म ६ जून १९५१ में पटना के एक संभ्रांत व्यवसायी परिवार में हुआ है । सुसंपन्न परिवार में जन्मी उषा का बचपन सुख-सुविधा और लाड़-प्यार से बीता । सन् १९५४ में उनकी अनौपचारिक शिक्षा की शुरूआत बड़ी बहन माया शर्मा के सान्निध्य में घर पर ही होने के उपरांत उसी वर्ष विद्यालय में उनका दाखिला भी हुआ । हरेक कक्षा में अव्वल रहने वाली उषा को स्कूल से कॉलेज तक के अध्ययन काल में निरंतर मेधावी छात्रवृत्ति मिलती रही । सन् १९६७ में बिहार परीक्षा बोर्ड अंतर्गत नारायणी कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय पटना से मैट्रिक उत्तीर्ण कर उसी विद्यालय से सन् १९६८ में प्रमाण पत्र (तत्कालीन प्री आर्ट्स) उत्तीर्ण किया । सन् १९७२ में पटना यूनिवर्सिटी से हिंदी साहित्य में स्नातक प्रतिष्ठा (बी ए ऑनर्स) उत्तीर्ण कर सन् १९७५ में उन्होंने हिंदी साहित्य से ही एम ए किया । सभी उपाधियों में उन्होंने प्रथम श्रेणी प्राप्त की है । सन् १९७९ में डॉ. उषा ने विद्यावारिधि की उपाधि प्राप्त की ।

सेवा के तौर पर सदा अध्यापन से ही जुड़ी रही उषा ने साहित्य सृजन की शुरूआत सन् १९७० में 'नदी और नारी' शीर्षक कविता से की, जो पटना के दैनिक अखबार 'आर्यावर्त' में प्रकाशित हुई थी । इसके अनंतर उनके लेख तथा रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे । साहित्य के प्रति इनकी धारणा है कि साहित्य स्वान्तः सुखाय का आधार है । साहित्यिक विधाओं के अंतर्गत मूलतः इन्होंने समालोचना क्षेत्र को अंगीकार किया है । लगभग चार दशक की लंबी साहित्य यात्रा में उषा ने प्रकाशित एवं प्रकाशनाधीन कृतियों सहित हिंदी में आठ और नेपाली में चार पुस्तकें लिखी हैं । वह एक तत्वान्वेषी, निष्पक्ष, तटस्थ एवं कुशल समालोचक हैं ।

राजनीति से अलग-थलग रहने वाली उषा परोपकारी स्वभाव की हैं । अपने मृदु स्वभाव और उदार हृदय के कारण समाज में इनकी उच्च प्रतिष्ठा है । हर तरह की

परिस्थिति में स्वयं को संतुलित रख पाने का इनमें अद्‌भुत सामर्थ्य है । डॉ. उषा ठाकुर में दूसरों के प्रति आदर और सहयोग की भावना है । अपने इस स्वभाव के कारण उनको जानने वाले सभी सहृदयों के लिए वह प्रिय और आदरणीय हैं । आस्तिक विचारधारा की उषा को प्राच्य संस्कृति और सभ्यता के प्रति गहरी आस्था और श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के प्रति पूर्ण निष्ठा है । उनका मानना है कि सत्कर्म का फल भी सत् ही होता है, इसलिए मनुष्य को आशावान होकर कर्म करते रहना चाहिए । निराशा को अपने आस पास फटकने तक से रोकना चाहिए और ऐसा करना कोई बहुत कठिन कार्य नहीं है । मनुष्य में यदि परोपकार, सेवा दया, करुणा, शांति आदि मानवीय गुण हों तो अमानवीय गुण कभी हावी नहीं हो सकते ।

५.२ संभावित शोध शीर्षक

हिंदी साहित्य की सुप्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. उषा ठाकुर एवं उनकी कृतियों के विषय में अनुसंधान करने वाले शोधार्थियों के लिए निम्नलिखित शोध शीर्षक उपयुक्त हो सकते हैं :

१) डॉ. उषा ठाकुर का साहित्यिक व्यक्तित्व

२) कुशल समालोचक डॉ. उषा ठाकुर

३) हिंदी समालोचना और उषा

४) उषा की समालोचना में सामाजिक चेतना

५) साहित्यकार उषा का जीवन दर्शन

६) नेपाल-भारत साहित्यिक संबंध और उषा

७) डॉ. उषा और नेपाली समालोचना

८) डॉ. उषा की साहित्य साधना

९) हिंदी समालोचना में डॉ. उषा का योगदान

१०) नेपाली समालोचना में डॉ. उषा का योगदान

ग्रंथ सूची

१) शैलेन्द्र कुमार शुक्ल – डॉ. रामदयाल राकेश : व्यक्तित्व एवं कृतित्व (शोध पत्र), हिंदी केंद्रीय विभाग, त्रि. वि. वि. कीर्तिपुर, वि. सं. २०६८

२) प्रा. डॉ. उषा ठाकुर – पंत काव्य की सामाजिक भूमिका – शोधपरक समालोचना (सन् १९९५)

३) प्रा. डॉ. उषा ठाकुर – हिंदी और नेपाली साहित्य के प्रतिनिधि हस्ताक्षर – समीक्षा संग्रह (सन् १९९८)

४) प्रा. डॉ. उषा ठाकुर – मरुभूमि का काँटा – हिंदी अनुवाद, कविता संग्रह (वि. सं. २०६०)

५) प्रा. डॉ. उषा ठाकुर – युगकवि सिद्धिचरण श्रेष्ठ की काव्य साधना – समालोचनात्मक संग्रह (वि. सं.२०६८)

६) प्रा. डॉ. उषा ठाकुर – स्रस्टाको सिर्जना र द्रष्टाको समालोचनात्मक दृष्टि – समीक्षा संग्रह (वि. सं. २०५९)

७) प्रा. डॉ. उषा ठाकुर – नेपाली साहित्यको श्रीवृद्धिमा शाहवंशीय श्रष्टाहरूको योगदान समालोचना (वि. सं.२०५९)

८) प्रा. डॉ. उषा ठाकुर – मरुभूमिका काँडा – बिम्ब प्रतिबिम्ब, संपादन (वि.सं. २०५९)

९) शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र – हिंदी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सन् १९८६

१०) राजेश्वर नेपाली – नेपाल में हिंदी की अवस्था, जनकपुर बौद्धिक समाज, जनकपुरधाम, सन् १९९६

११) डॉ. सूर्यनाथ गोप – नेपाल में हिंदी और हिंदी साहित्य, किताब महल, वाराणसी, सन् १९९४

१२) प्रो. महावीर सरन जैन – रचनाकार, ई-पत्रिका, अंतरजाल (इंटरनेट)